॥ॐ॥
॥ॐ श्री परमात्मने नमः ॥
॥श्री गणेशाय नमः॥

# श्री हनुमान स्तवन संग्रह

# विषय-सूची


॥आञ्जनेय गायत्री ॥.....3

॥हनुमान स्तवन॥.....4

॥आरती श्री हनुमानजी॥.....6

॥हनुमान चालीसा॥.....8

॥बजरंग-बाण॥.....12

॥ इति गोस्वामि तुलसीदास कृत बजरंग-बाण सम्पूर्ण ॥.....14

॥सङ्कटमोचन हनुमानाष्टक॥.....15

॥ हनुमान बाहुक ॥.....18

॥ श्रीहनुमत्ताण्डवस्तोत्रम् ॥.....37

॥ श्रीहनुमत्स्तोत्रम् ॥.....41

॥ श्रीआञ्जनेयसहस्रनामस्तोत्रम् ॥.....43

॥ श्रीआञ्जनेय द्वादशनामस्तोत्रम् ॥.....64

॥ श्रीआञ्जनेयसहस्रनामावली ॥.....65

# ॥आञ्जनेय गायत्री ॥

**ॐ आञ्जनेयाय विद्महे वायुपुत्राय धीमहि ।**
**तन्नो हनुमत् प्रचोदयात् ॥**

## ॥हनुमान स्तवन॥

प्रनवउँ पवनकुमार खल बन पावक ग्यानघन।
जासु हृदय आगार बसहिं राम सर चाप धर॥१॥

अतुलितबलधामं हेमशैलाभदेहं।
दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम्॥२॥

सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं।
रघुपतिप्रियभक्तं वातजातं नमामि॥३॥

गोष्पदीकृतवारीशं मशकीकृतराक्षसम्।
रामायणमहामालारत्नं वन्देऽनिलात्मजम्॥४॥

अञ्जनानन्दनं वीरं जानकीशोकनाशनम्।
कपीशमक्षहन्तारं वन्दे लङ्काभयङ्करम्॥५॥

महाव्याकरणाम्भोधिमन्थमानसमन्दरम्।
उल्लङ्घ्य सिन्धोः सलिलं सलीलं यः शोकवह्निं जनकात्मजायाः।
आदाय तेनैव ददाह लङ्कां नमामि तं प्राञ्जलिराञ्जनेयम्॥७॥

मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम्।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये॥८॥

आञ्जनेयमतिपाटलाननं काञ्चनाद्रिकमनीयविग्रहम्।
पारिजाततरुमूलवासिनं भावयामि पवमाननन्दनम्॥९॥

यत्र-यत्र रघुनाथकीर्तनं तत्र-तत्र कृतमस्तकाञ्जलिम्।
बाष्पवारिपरिपूर्णलोचनं मारुतिं नमत राक्षसान्तकम्॥१०॥

# ॥जय श्री राम॥

श्री राम जय राम जय जय राम
श्री राम जय राम जय जय राम
श्री राम जय राम जय जय राम
श्री राम जय राम जय जय राम
श्री राम जय राम जय जय राम
श्री राम जय राम जय जय राम
श्री राम जय राम जय जय राम
श्री राम जय राम जय जय राम
श्री राम जय राम जय जय राम
श्री राम जय राम जय जय राम
श्री राम जय राम जय जय राम
श्री राम जय राम जय जय राम
श्री राम जय राम जय जय राम
श्री राम जय राम जय जय राम
श्री राम जय राम जय जय राम
श्री राम जय राम जय जय राम
श्री राम जय राम जय जय राम
श्री राम जय राम जय जय राम
श्री राम जय राम जय जय राम
श्री राम जय राम जय जय राम
श्री राम जय राम जय जय राम

## ॥आरती श्री हनुमानजी॥

आरती कीजै हनुमान लला की। दुष्ट दलन रघुनाथ कला की॥
जाके बल से गिरिवर कांपे। रोग दोष जाके निकट न झांके॥

अंजनि पुत्र महा बलदाई। सन्तन के प्रभु सदा सहाई॥
दे बीरा रघुनाथ पठाए। लंका जारि सिया सुधि लाए॥

लंका सो कोट समुद्र-सी खाई। जात पवनसुत बार न लाई॥
लंका जारि असुर संहारे। सियारामजी के काज सवारे॥

लक्ष्मण मूर्छित पड़े सकारे। आनि संजीवन प्राण उबारे॥
पैठि पाताल तोरि जम-कारे। अहिरावण की भुजा उखारे॥

बाएं भुजा असुरदल मारे। दाहिने भुजा संतजन तारे॥
सुर नर मुनि आरती उतारें। जय जय जय हनुमान उचारें॥

कंचन थार कपूर लौ छाई। आरती करत अंजना माई॥
जो हनुमानजी की आरती गावे। बसि बैकुण्ठ परम पद पावे॥

# ॥हनुमान चालीसा॥

## ॥दोहा॥

श्री गुरु चरन सरोज रज, निज मनु मुकुर सुधारि।
बरनउं रघुबर विमल जसु, जो दायकु फल चारि॥
बुद्धिहीन तनु जानिकै, सुमिरौं पवन-कुमार।
बल बुद्धि विद्या देहु मोहिं, हरहु कलेश विकार॥

## ॥चौपाई॥

जय हनुमान ज्ञान गुण सागर। जय कपीस तिहुँ लोक उजागर॥
राम दूत अतुलित बल धामा। अंजनि-पुत्र पवनसुत नामा॥

महावीर विक्रम बजरंगी। कुमति निवार सुमति के संगी॥
कंचन बरन बिराज सुवेसा। कानन कुण्डल कुंचित केसा॥

हाथ वज्र औ ध्वजा बिराजै। काँधे मूँज जनेऊ साजै॥
शंकर सुवन केसरीनन्दन। तेज प्रताप महा जग वन्दन॥

विद्यावान गुणी अति चातुर। राम काज करिबे को आतुर॥
प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया। राम लखन सीता मन बसिया॥

सूक्ष्म रुप धरि सियहिं दिखावा। विकट रुप धरि लंक जरावा॥
भीम रुप धरि असुर संहारे। रामचन्द्र के काज संवारे॥

लाय सजीवन लखन जियाये। श्रीरघुवीर हरषि उर लाये॥
रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई। तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई॥

सहस बदन तुम्हरो यश गावैं। अस कहि श्री पति कंठ लगावैं॥
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा। नारद सारद सहित अहीसा॥

जम कुबेर दिकपाल जहां ते। कवि कोबिद कहि सके कहां ते॥
तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा। राम मिलाय राज पद दीन्हा॥

तुम्हरो मन्त्र विभीषन माना। लंकेश्वर भये सब जग जाना॥
जुग सहस्त्र योजन पर भानू । लील्यो ताहि मधुर फ़ल जानू॥

प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं। जलधि लांघि गए अचरज नाहीं॥
दुर्गम काज जगत के जेते। सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते॥

राम दुआरे तुम रखवारे। होत न आज्ञा बिनु पैसारे॥
सब सुख लहै तुम्हारी सरना। तुम रक्षक काहू को डरना॥
आपन तेज सम्हारो आपै। तीनों लोक हांक तें कांपै॥

भूत पिशाच निकट नहिं आवै। महावीर जब नाम सुनावै॥

नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा॥
संकट ते हनुमान छुड़ावै। मन क्रम वचन ध्यान जो लावै॥

सब पर राम तपस्वी राजा। तिन के काज सकल तुम साजा॥
और मनोरथ जो कोई लावै। सोइ अमित जीवन फ़ल पावै॥

चारों जुग परताप तुम्हारा। है परसिद्ध जगत उजियारा॥
साधु सन्त के तुम रखवारे। असुर निकन्दन राम दुलारे॥

अष्ट सिद्धि नवनिधि के दाता। अस बर दीन जानकी माता॥
राम रसायन तुम्हरे पासा। सदा रहो रघुपति के दासा॥

तुम्हरे भजन राम को पावै। जनम जनम के दुख बिसरावै॥
अन्तकाल रघुबर पुर जाई। जहाँ जन्म हरि-भक्त कहाई॥

और देवता चित्त न धरई। हनुमत सेई सर्व सुख करई॥
संकट कटै मिटै सब पीरा। जो सुमिरै हनुमत बलबीरा॥

जय जय जय हनुमान गोसाई। कृपा करहु गुरुदेव की नाई॥
जो शत बार पाठ कर सोई। छूटहिं बंदि महा सुख होई॥

जो यह पढ़ै हनुमान चालीसा। होय सिद्धि साखी गौरीसा॥
तुलसीदास सदा हरि चेरा। कीजै नाथ हृदय महँ डेरा॥

॥दोहा॥

पवनतनय संकट हरन, मंगल मूरति रुप।
राम लखन सीता सहित हृदय बसहु सुर भूप॥

## ॥बजरंग-बाण॥

॥दोहा॥

निश्चय प्रेम प्रतीति ते, बिनय करैं सनमान।
तेहि के कारज सकल शुभ, सिद्ध करैं हनुमान॥

॥चौपाई॥

जय हनुमंत संत हितकारी । सुन लीजै प्रभु अरज हमारी॥
जन के काज बिलंब न कीजै। आतुर दौरि महा सुख दीजै॥

जैसे कूदि सिंधु महिपारा । सुरसा बदन पैठि बिस्तारा॥
आगे जाय लंकिनी रोका । मारेहु लात गई सुरलोका॥

जाय बिभीषन को सुख दीन्हा। सीता निरखि परमपद लीन्हा॥
बाग उजारि सिंधु महँ बोरा । अति आतुर जमकातर तोरा॥

अक्षय कुमार मारि संहारा । लूम लपेटि लंक को जारा॥
लाह समान लंक जरि गई । जय जय धुनि सुरपुर नभ भई॥

अब बिलंब केहि कारन स्वामी। कृपा करहु उर अंतरयामी॥
जय जय लखन प्रान के दाता। आतुर ह्वै दुख करहु निपाता॥

जै हनुमान जयति बल-सागर। सुर-समूह-समरथ भट-नागर॥
ॐ हनु हनु हनु हनुमंत हठीले। बैरिहि मारु बज्र की कीले॥

ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं हनुमंत कपीसा। ॐ हुं हुं हुं हनु अरि उर सीसा॥
जय अंजनि कुमार बलवंता । शंकरसुवन बीर हनुमंता॥

बदन कराल काल-कुल-घालक। राम सहाय सदा प्रतिपालक॥
भूत, प्रेत, पिसाच निसाचर । अगिन बेताल काल मारी मर॥

इन्हें मारु, तोहि सपथ राम की। राखु नाथ मरजाद नाम की॥
सत्य होहु हरि सपथ पाइ कै। राम दूत धरु मारु धाइ कै॥

जय जय जय हनुमंत अगाधा। दुख पावत जन केहि अपराधा॥
पूजा जप तप नेम अचारा। नहिं जानत कछु दास तुम्हारा॥

बन उपबन मग गिरि गृह माहीं। तुम्हरे बल हौं डरपत नाहीं॥
जनकसुता हरि दास कहावौ। ताकी सपथ बिलंब न लावौ॥

जै जै जै धुनि होत अकासा। सुमिरत होय दुसह दुख नासा॥
चरन पकरि, कर जोरि मनावौं। यहि औसर अब केहि गोहरावौं॥

उठु, उठु, चलु, तोहि राम दुहाई। पायँ परौं, कर जोरि मनाई॥

ॐ चं चं चं चं चपल चलंता। ॐ हनु हनु हनु हनु हनुमंता॥
ॐ हं हं हाँक देत कपि चंचल। ॐ सं सं सहमि पराने खल-दल॥

अपने जन को तुरत उबारौ। सुमिरत होय आनंद हमारौ॥
यह बजरंग-बाण जेहि मारै। ताहि कहौ फिरि कवन उबारै॥

पाठ करै बजरंग-बाण की। हनुमत रक्षा करै प्रान की॥
यह बजरंग बाण जो जापैं। तासों भूत-प्रेत सब कापैं॥
धूप देय जो जपै हमेसा। ताके तन नहिं रहै कलेसा॥

॥दोहा॥

उर प्रतीति दृढ़, सरन ह्वै, पाठ करै धरि ध्यान।
बाधा सब हर, करैं सब काम सफल हनुमान॥

॥ इति गोस्वामि तुलसीदास कृत बजरंग-बाण सम्पूर्ण ॥

## ॥सङ्कटमोचन हनुमानाष्टक॥

बाल समय रबि भक्षि लियो तब तीनहुँ लोक भयो अँधियारो ।
ताहि सों त्रास भयो जग को यह सङ्कट काहु सों जात न टारो ।
देवन आनि करी बिनती तब छाँड़ि दियो रबि कष्ट निवारो ।
को नहिं जानत है जगमें कपि सङ्कटमोचन नाम तिहारो ॥ १ ॥

बालि की त्रास कपीस बसै गिरि जात महाप्रभु पन्थ निहारो ।
चौङ्कि महा मुनि साप दियो तब चाहिय कौन बिचार बिचारो ।
कै द्विज रूप लिवाय महाप्रभु सो तुम दास के सोक निवारो ।
को नहिं जानत है जगमें कपि सङ्कटमोचन नाम तिहारो ॥ २ ॥

अङ्गद के सँग लेन गये सिय खोज कपीस यह बैन उचारो ।
जीवत ना बचिहौ हम सो जु बिना सुधि लाए इहाँ पगु धारो ।
हेरि थके तट सिन्धु सबै तब लाय सिया सुधि प्रान उबारो ।
को नहिं जानत है जगमें कपि सङ्कटमोचन नाम तिहारो ॥ ३ ॥

रावन त्रास दई सिय को सब राक्षसि सों कहि सोक निवारो ।
ताहि समय हनुमान महाप्रभु जाय महा रजनीचर मारो ।
चाहत सीय असोक सों आगि सु दै प्रभु मुद्रिका सोक निवारो ।
को नहिं जानत है जगमें कपि सङ्कटमोचन नाम तिहारो ॥ ४ ॥

बान लग्यो उर लछिमन के तब प्रान तजे सुत रावन मारो ।
लै गृह बैद्य सुषेन समेत तबै गिरि द्रोन सु बीर उपारो ।
आनि सजीवन हाथ दई तब लछिमन के तुम प्रान उबारो ।
को नहिं जानत है जगमें कपि सङ्कटमोचन नाम तिहारो ॥ ५ ॥

रावन जुद्ध अजान कियो तब नाग कि फाँस सबै सिर डारो ।
श्रीरघुनाथ समेत सबै दल मोह भयो यह सङ्कट भारो ।
आनि खगेस तबै हनुमान जु बन्धन काटि सुत्रास निवारो ।
को नहिं जानत है जगमें कपि सङ्कटमोचन नाम तिहारो ॥ ६ ॥

बन्धु समेत जबै अहिरावन लै रघुनाथ पताल सिधारो ।
देबिहिं पूजि भली बिधि सों बलि देउ सबै मिलि मन्त्र बिचारो ।
जाय सहाय भयो तब ही अहिरावन सैन्य समेत सँहारो ।
को नहिं जानत है जगमें कपि सङ्कटमोचन नाम तिहारो ॥ ७ ॥

काज किये बड़ देवन के तुम बीर महाप्रभु देखि बिचारो ।
कौन सो सङ्कट मोर गरीब को जो तुमसों नहिं जात है टारो ।
बेगि हरो हनुमान महाप्रभु जो कछु सङ्कट होय हमारो ।
को नहिं जानत है जगमें कपि सङ्कटमोचन नाम तिहारो ॥ ८ ॥

॥दोहा॥

लाल देह लाली लसे अरू धरि लाल लँगूर ।
बज्र देह दानव दलन जय जय जय कपि सूर ॥

सियावर रामचन्द्र पद गहि रहुँ ।
उमावर शम्भुनाथ पद गहि रहुँ ।
महावीर बजरँगी पद गहि रहुँ ।
शरणा गतो हरि ॥

॥ इति गोस्वामि तुलसीदास कृत सङ्कटमोचन हनुमानाष्टक सम्पूर्ण ॥

## ॥ हनुमान बाहुक ॥

॥दोहा॥

॥छप्पय॥

सिंधु तरन, सिय-सोच हरन, रबि बाल बरन तनु ।
भुज बिसाल, मूरति कराल कालहु को काल जनु ॥
गहन-दहन-निरदहन लंक निःसंक, बंक-भुव ।
जातुधान-बलवान मान-मद-दवन पवनसुव ॥

कह तुलसिदास सेवत सुलभ सेवक हित सन्तत निकट ।
गुन गनत, नमत, सुमिरत जपत समन सकल-संकट-विकट ॥१॥
स्वर्न-सैल-संकास कोटि-रवि तरुन तेज घन ।
उर विसाल भुज दण्ड चण्ड नख-वज्रतन ॥
पिंग नयन, भृकुटी कराल रसना दसनानन ।
कपिस केस करकस लंगूर, खल-दल-बल-भानन ॥
कह तुलसिदास बस जासु उर मारुतसुत मूरति विकट ।
संताप पाप तेहि पुरुष पहि सपनेहुँ नहिं आवत निकट ॥२॥

॥झूलना॥

पञ्चमुख-छःमुख भृगु मुख्य भट असुर सुर,
सर्व सरि समर समरत्थ सूरो ।

बांकुरो बीर बिरुदैत बिरुदावली,
बेद बंदी बदत पैजपूरो ॥
जासु गुनगाथ रघुनाथ कह जासुबल,
बिपुल जल भरित जग जलधि झूरो ।
दुवन दल दमन को कौन तुलसीस है,
पवन को पूत रजपूत रुरो ॥३॥

॥घनाक्षरी॥

भानुसों पढ़न हनुमान गए भानुमन,
अनुमानि सिसु केलि कियो फेर फारसो ।
पाछिले पगनि गम गगन मगन मन,
क्रम को न भ्रम कपि बालक बिहार सो ॥
कौतुक बिलोकि लोकपाल हरिहर विधि,
लोचननि चकाचौंधी चित्तनि खबार सो।
बल कैंधो बीर रस धीरज कै, साहस कै,
तुलसी सरीर धरे सबनि सार सो ॥४॥

भारत में पारथ के रथ केथू कपिराज,
गाज्यो सुनि कुरुराज दल हल बल भो ।

कह्यो द्रोन भीषम समीर सुत महाबीर,
बीर-रस-बारि-निधि जाको बल जल भो ॥
बानर सुभाय बाल केलि भूमि भानु लागि,
फलँग फलाँग हूतें घाटि नभ तल भो ।
नाई-नाई-माथ जोरि-जोरि हाथ जोधा जो हैं,
हनुमान देखे जगजीवन को फल भो ॥५॥

गो-पद पयोधि करि, होलिका ज्यों लाई लंक,
निपट निःसंक पर पुर गल बल भो ।
द्रोन सो पहार लियो ख्याल ही उखारि कर,
कंदुक ज्यों कपि खेल बेल कैसो फल भो ॥
संकट समाज असमंजस भो राम राज,
काज जुग पूगनि को करतल पल भो ।
साहसी समत्थ तुलसी को नाई जा की बाँह,
लोक पाल पालन को फिर थिर थल भो ॥६॥

कमठ की पीठि जाके गोडनि की गाड़ैं मानो,
नाप के भाजन भरि जल निधि जल भो ।
जातुधान दावन परावन को दुर्ग भयो,
महा मीन बास तिमि तोमनि को थल भो ॥

कुम्भकरन रावन पयोद नाद ईधन को,
तुलसी प्रताप जाको प्रबल अनल भो ।
भीषम कहत मेरे अनुमान हनुमान,
सारिखो त्रिकाल न त्रिलोक महाबल भो ॥७॥

दूत राम राय को सपूत पूत पौन को तू,
अंजनी को नन्दन प्रताप भूरि भानु सो ।
सीय-सोच-समन, दुरित दोष दमन,
सरन आये अवन लखन प्रिय प्राण सो ॥
दसमुख दुसह दरिद्र दरिबे को भयो,
प्रकट तिलोक ओक तुलसी निधान सो ।
ज्ञान गुनवान बलवान सेवा सावधान,
साहेब सुजान उर आनु हनुमान सो ॥८॥

दवन दुवन दल भुवन बिदित बल,
बेद जस गावत बिबुध बंदी छोर को ।
पाप ताप तिमिर तुहिन निघटन पटु,
सेवक सरोरुह सुखद भानु भोर को ॥
लोक परलोक तें बिसोक सपने न सोक,
तुलसी के हिये है भरोसो एक ओर को ।

राम को दुलारो दास बामदेव को निवास।
नाम कलि कामतरु केसरी किसोर को ॥९॥

महाबल सीम महा भीम महाबान इत,
महाबीर बिदित बरायो रघुबीर को ।
कुलिस कठोर तनु जोर परै रोर रन,
करुना कलित मन धारमिक धीर को ॥
दुर्जन को कालसो कराल पाल सज्जन को,
सुमिरे हरन हार तुलसी की पीर को ।
सीय-सुख-दायक दुलारो रघुनायक को,
सेवक सहायक है साहसी समीर को ॥१०॥

रचिबे को बिधि जैसे, पालिबे को हरि हर,
मीच मारिबे को, ज्याईबे को सुधापान भो ।
धरिबे को धरनि, तरनि तम दलिबे को,
सोखिबे कृसानु पोषिबे को हिम भानु भो ॥
खल दुःख दोषिबे को, जन परितोषिबे को,
माँगिबो मलीनता को मोदक दुदान भो ।
आरत की आरति निवारिबे को तिहुँ पुर,

तुलसी को साहेब हठीलो हनुमान भो ॥११॥

सेवक स्योकाई जानि जानकीस मानै कानि,
सानुकूल सूलपानि नवै नाथ नाँक को ।
देवी देव दानव दयावने ह्वै जोरैं हाथ,
बापुरे बराक कहा और राजा राँक को ॥
जागत सोवत बैठे बागत बिनोद मोद,
ताके जो अनर्थ सो समर्थ एक आँक को ।
सब दिन रुरो परै पूरो जहाँ तहाँ ताहि,
जाके है भरोसो हिये हनुमान हाँक को ॥१२॥

सानुग सगौरि सानुकूल सूलपानि ताहि,
लोकपाल सकल लखन राम जानकी ।
लोक परलोक को बिसोक सो तिलोक ताहि,
तुलसी तमाइ कहा काहू बीर आनकी ॥
केसरी किसोर बन्दीछोर के नेवाजे सब,
कीरति बिमल कपि करुनानिधान की ।
बालक ज्यों पालि हैं कृपालु मुनि सिद्धता को,
जाके हिये हुलसति हाँक हनुमान की ॥१३॥

करुनानिधान बलबुद्धि के निधान हौ,
महिमा निधान गुनज्ञान के निधान हौ ।
बाम देव रुप भूप राम के सनेही,
नाम, लेत देत अर्थ धर्म काम निरबान हौ ॥
आपने प्रभाव सीताराम के सुभाव सील,
लोक बेद बिधि के बिदूष हनुमान हौ ।
मन की बचन की करम की तिहूँ प्रकार,
तुलसी तिहारो तुम साहेब सुजान हौ ॥१४॥

मन को अगम तन सुगम किये कपीस,
काज महाराज के समाज साज साजे हैं ।
देवबंदी छोर रनरोर केसरी किसोर,
जुग जुग जग तेरे बिरद बिराजे हैं ।
बीर बरजोर घटि जोर तुलसी की ओर,
सुनि सकुचाने साधु खल गन गाजे हैं ।
बिगरी सँवार अंजनी कुमार कीजे मोहिं,
जैसे होत आये हनुमान के निवाजे हैं ॥१५॥

## ॥सवैया॥

जान सिरोमनि हो हनुमान सदा जन के मन बास तिहारो ।
ढ़ारो बिगारो मैं काको कहा केहि कारन खीझत हौं तो तिहारो ॥
साहेब सेवक नाते तो हातो कियो सो तहां तुलसी को न चारो ।
दोष सुनाये तैं आगेहुँ को होशियार ह्वैं हों मन तो हिय हारो ॥१६॥

तेरे थपै उथपै न महेस, थपै थिर को कपि जे उर घाले ।
तेरे निबाजे गरीब निबाज बिराजत बैरिन के उर साले ॥
संकट सोच सबै तुलसी लिये नाम फटै मकरी के से जाले ।
बूढ भये बलि मेरिहिं बार, कि हारि परे बहुतै नत पाले ॥१७॥

सिंधु तरे बड़े बीर दले खल, जारे हैं लंक से बंक मवासे ।
तैं रनि केहरि केहरि के बिदले अरि कुंजर छैल छवासे ॥
तोसो समत्थ सुसाहेब सेई सहै तुलसी दुख दोष दवा से ।
बानरबाज ! बढ़े खल खेचर, लीजत क्यों न लपेटि लवासे ॥१८॥

अच्छ विमर्दन कानन भानि दसानन आनन भा न निहारो ।
बारिदनाद अकंपन कुंभकरन से कुञ्जर केहरि वारो ॥
राम प्रताप हुतासन, कच्छ, विपच्छ, समीर समीर दुलारो ।

पाप ते साप ते ताप तिहूँ तें सदा तुलसी कह सो रखवारो ॥१९॥

॥घनाक्षरी॥

जानत जहान हनुमान को निवाज्यो जन,
मन अनुमानि बलि बोल न बिसारिये ।
सेवा जोग तुलसी कबहुँ कहा चूक परी,
साहेब सुभाव कपि साहिबी संभारिये ॥
अपराधी जानि कीजै सासति सहस भान्ति,
मोदक मरै जो ताहि माहुर न मारिये ।
साहसी समीर के दुलारे रघुबीर जू के,
बाँह पीर महाबीर बेगि ही निवारिये ॥२०॥

बालक बिलोकि, बलि बारें तें आपनो कियो,
दीनबन्धु दया कीन्हीं निरुपाधि न्यारिये ।
रावरो भरोसो तुलसी के, रावरोई बल,
आस रावरीयै दास रावरो विचारिये ॥
बड़ो बिकराल कलि काको न बिहाल कियो,
माथे पगु बलि को निहारि सो निबारिये ।
केसरी किसोर रनरोर बरजोर बीर,

बाँह पीर राहु मातु ज्यौं पछारि मारिये ॥२१॥

उथपे थपनथिर थपे उथपनहार,
केसरी कुमार बल आपनो संबारिये ।
राम के गुलामनि को काम तरु रामदूत,
मोसे दीन दूबरे को तकिया तिहारिये ॥
साहेब समर्थ तो सों तुलसी के माथे पर,
सोऊ अपराध बिनु बीर, बाँधि मारिये ।
पोखरी बिसाल बाँहु, बलि, बारिचर पीर,
मकरी ज्यों पकरि के बदन बिदारिये ॥२२॥

राम को सनेह, राम साहस लखन सिय,
राम की भगति, सोच संकट निवारिये ।
मुद मरकट रोग बारिनिधि हेरि हारे,
जीव जामवंत को भरोसो तेरो भारिये ॥
कूदिये कृपाल तुलसी सुप्रेम पब्बयतें,
सुथल सुबेल भालू बैठि कै विचारिये ।
महाबीर बाँकुरे बराकी बाँह पीर क्यों न,
लंकिनी ज्यों लात घात ही मरोरि मारिये ॥२३॥

लोक परलोकहुँ तिलोक न विलोकियत,
तोसे समरथ चष चारिहूँ निहारिये ।
कर्म, काल, लोकपाल, अग जग जीवजाल,
नाथ हाथ सब निज महिमा बिचारिये ॥
खास दास रावरो, निवास तेरो तासु उर,
तुलसी सो, देव दुखी देखिअत भारिये ।
बात तरुमूल बाँहूसूल कपिकच्छु बेलि,
उपजी सकेलि कपि केलि ही उखारिये ॥२४॥

करम कराल कंस भूमिपाल के भरोसे,
बकी बक भगिनी काहू तें कहा डरैगी ।
बड़ी बिकराल बाल घातिनी न जात कहि,
बाँहू बल बालक छबीले छोटे छरैगी ॥
आई है बनाई बेष आप ही बिचारि देख,
पाप जाय सब को गुनी के पाले परैगी ।
पूतना पिसाचिनी ज्यौं कपि कान्ह तुलसी की,
बाँह पीर महाबीर तेरे मारे मरैगी ॥२५॥

भाल की कि काल की कि रोष की त्रिदोष की है,
बेदन बिषम पाप ताप छल छाँह की ।

करमन कूट की कि जन्त्र मन्त्र बूट की,
पराहि जाहि पापिनी मलीन मन माँह की ॥
पैहहि सजाय, नत कहत बजाय तोहि,
बाबरी न होहि बानि जानि कपि नाँह की ।
आन हनुमान की दुहाई बलवान की,
सपथ महाबीर की जो रहै पीर बाँह की ॥२६॥

सिंहिका सँहारि बल सुरसा सुधारि छल,
लंकिनी पछारि मारि बाटिका उजारी है ।
लंक परजारि मकरी बिदारि बार बार,
जातुधान धारि धूरि धानी करि डारी है ॥
तोरि जमकातरि मंदोदरी कठोरि आनी,
रावन की रानी मेघनाद महतारी है ।
भीर बाँह पीर की निपट राखी महाबीर,
कौन के सकोच तुलसी के सोच भारी है ॥२७॥

तेरो बालि केलि बीर सुनि सहमत धीर,
भूलत सरीर सुधि सक्र रवि राहु की ।
तेरी बाँह बसत बिसोक लोक पाल सब,
तेरो नाम लेत रहैं आरति न काहु की ॥

साम दाम भेद विधि बेदहू लबेद सिधि,
हाथ कपिनाथ ही के चोटी चोर साहु की ।
आलस अनख परिहास कै सिखावन है,
एते दिन रही पीर तुलसी के बाहु की ॥२८॥

टूकनि को घर घर डोलत कँगाल बोलि,
बाल ज्यों कृपाल नत पाल पालि पोसो है ।
कीन्ही है सँभार सार अँजनी कुमार बीर,
आपनो बिसारि हैं न मेरेहू भरोसो है ॥
इतनो परेखो सब भान्ति समरथ आजु,
कपिराज सांची कहौं को तिलोक तोसो है ।
सासति सहत दास कीजे पेखि परिहास,
चीरी को मरन खेल बालकनि कोसो है ॥२९॥

आपने ही पाप तें त्रिपात तें कि साप तें,
बढ़ी है बाँह बेदन कही न सहि जाति है ।
औषध अनेक जन्त्र मन्त्र टोटकादि किये,
बादि भये देवता मनाये अधीकाति है ॥
करतार, भरतार, हरतार, कर्म काल,
को है जगजाल जो न मानत इताति है ।

चेरो तेरो तुलसी तू मेरो कह्यो राम दूत,
ढील तेरी बीर मोहि पीर तें पिराति है ॥३०॥

दूत राम राय को, सपूत पूत वाय को,
समत्व हाथ पाय को सहाय असहाय को ।
बाँकी बिरदावली बिदित बेद गाइयत,
रावन सो भट भयो मुठिका के धाय को ॥
एते बडे साहेब समर्थ को निवाजो आज,
सीदत सुसेवक बचन मन काय को ।
थोरी बाँह पीर की बड़ी गलानि तुलसी को,
कौन पाप कोप, लोप प्रकट प्रभाय को ॥३१॥

देवी देव दनुज मनुज मुनि सिद्ध नाग,
छोटे बड़े जीव जेते चेतन अचेत हैं ।
पूतना पिसाची जातुधानी जातुधान बाग,
राम दूत की रजाई माथे मानि लेत हैं ॥
घोर जन्त्र मन्त्र कूट कपट कुरोग जोग,
हनुमान आन सुनि छाड़त निकेत हैं ।
क्रोध कीजे कर्म को प्रबोध कीजे तुलसी को,
सोध कीजे तिनको जो दोष दुख देत हैं ॥३२॥

तेरे बल बानर जिताये रन रावन सों,
तेरे घाले जातुधान भये घर घर के ।
तेरे बल राम राज किये सब सुर काज,
सकल समाज साज साजे रघुबर के ॥
तेरो गुनगान सुनि गीरबान पुलकत,
सजल बिलोचन बिरंचि हरिहर के ।
तुलसी के माथे पर हाथ फेरो कीस नाथ,
देखिये न दास दुखी तोसो कनिगर के ॥३३॥

पालो तेरे टूक को परेहू चूक मूकिये न,
कूर कौड़ी दूको हौं आपनी ओर हेरिये ।
भोरानाथ भोरे ही सरोष होत थोरे दोष,
पोषि तोषि थापि आपनो न अव डेरिये ॥
अँबु तू हौं अँबु चूर, अँबु तू हौं डिंभ सो न,
बूझिये बिलंब अवलंब मेरे तेरिये ।
बालक बिकल जानि पाहि प्रेम पहिचानि,
तुलसी की बाँह पर लामी लूम फेरिये ॥३४॥

घेरि लियो रोगनि, कुजोगनि, कुलोगनि ज्यौं,

बासर जलद घन घटा धुकि धाई है ।
बरसत बारि पीर जारिये जवासे जस,
रोष बिनु दोष धूम मूल मलिनाई है ॥
करुनानिधान हनुमान महा बलवान,
हेरि हँसि हाँकि फूंकि फौंजै ते उड़ाई है ।
खाये हुतो तुलसी कुरोग राढ़ राकसनि,
केसरी किसोर राखे बीर बरिआई है ॥३५॥

॥सवैया॥

राम गुलाम तु ही हनुमान गोसाँई सुसाँई सदा अनुकूलो ।
पाल्यो हौं बाल ज्यों आखर दू पितु मातु सों मंगल मोद समूलो ॥
बाँह की बेदन बाँह पगार पुकारत आरत आनँद भूलो ।
श्री रघुबीर निवारिये पीर रहौं दरबार परो लटि लूलो ॥३६॥

॥घनाक्षरी॥

काल की करालता करम कठिनाई कीधौ,
पाप के प्रभाव की सुभाय बाय बावरे ।
बेदन कुभाँति सो सही न जाति राति दिन,\

सोई बाँह गही जो गही समीर डाबरे ॥
लायो तरु तुलसी तिहारो सो निहारि बारि,
सींचिये मलीन भो तयो है तिहुँ तावरे ।
भूतनि की आपनी पराये की कृपा निधान,
जानियत सबही की रीति राम रावरे ॥३७॥

पाँय पीर पेट पीर बाँह पीर मुंह पीर,
जर जर सकल पीर मई है ।
देव भूत पितर करम खल काल ग्रह,
मोहि पर दवरि दमानक सी दई है ॥
हौं तो बिनु मोल के बिकानो बलि बारे हीतें,
ओट राम नाम की ललाट लिखि लई है ।
कुँभज के किंकर बिकल बूढ़े गोखुरनि,
हाय राम राय ऐसी हाल कहूँ भई है ॥३८॥

बाहुक सुबाहु नीच लीचर मरीच मिलि,
मुँह पीर केतुजा कुरोग जातुधान है ।
राम नाम जप जाग कियो चहों सानुराग,
काल कैसे दूत भूत कहा मेरे मान है ॥
सुमिरे सहाय राम लखन आखर दौऊ,

जिनके समूह साके जागत जहान है ।
तुलसी सँभारि ताडका सँहारि भारि भट,
बेधे बरगद से बनाई बानवान है ॥३९॥

बालपने सूधे मन राम सनमुख भयो,
राम नाम लेत माँगि खात टूक टाक हौं ।
परयो लोक रीति में पुनीत प्रीति राम राय,
मोह बस बैठो तोरि तरकि तराक हौं ॥
खोटे खोटे आचरन आचरत अपनायो,
अंजनी कुमार सोध्यो रामपानि पाक हौं ।
तुलसी गुसाँई भयो भोंडे दिन भूल गयो,
ताको फल पावत निदान परिपाक हौं ॥४०॥

असन बसन हीन बिषम बिषाद लीन,
देखि दीन दूबरो करै न हाय हाय को ।
तुलसी अनाथ सो सनाथ रघुनाथ कियो,
दियो फल सील सिंधु आपने सुभाय को ॥
नीच यहि बीच पति पाइ भरु हाईगो,
बिहाइ प्रभु भजन बचन मन काय को ।
ता तें तनु पेषियत घोर बरतोर मिस,

फूटि फूटि निकसत लोन राम राय को ॥४१॥

जीओ जग जानकी जीवन को कहाइ जन,
मरिबे को बारानसी बारि सुर सरि को ।
तुलसी के दोहूँ हाथ मोदक हैं ऐसे ठाँऊ,
जाके जिये मुये सोच करिहैं न लरि को ॥
मो को झूँटो साँचो लोग राम कौ कहत सब,
मेरे मन मान है न हर को न हरि को ।
भारी पीर दुसह सरीर तें बिहाल होत,
सोऊ रघुबीर बिनु सकै दूर करि को ॥४२॥

सीतापति साहेब सहाय हनुमान नित,
हित उपदेश को महेस मानो गुरु कै ।
मानस बचन काय सरन तिहारे पाँय,
तुम्हरे भरोसे सुर मैं न जाने सुर कै ॥
ब्याधि भूत जनित उपाधि काहु खल की,
समाधि की जै तुलसी को जानि जन फुर कै ।
कपिनाथ रघुनाथ भोलानाथ भूतनाथ,
रोग सिंधु क्यों न डारियत गाय खुर कै ॥४३॥

कहों हनुमान सों सुजान राम राय सों,
कृपानिधान संकर सों सावधान सुनिये ।
हरष विषाद राग रोष गुन दोष मई,
बिरची बिरञ्ची सब देखियत दुनिये ॥
माया जीव काल के करम के सुभाय के,
करैया राम बेद कहें साँची मन गुनिये ।
तुम्ह तें कहा न होय हा हा सो बुझैये मोहिं,
हौं हूँ रहों मौनही वयो सो जानि लुनिये ॥४४॥

॥ इति गोस्वामि तुलसीदास कृत हनुमान बाहुक सम्पूर्ण ॥

## ॥ श्रीहनुमत्ताण्डवस्तोत्रम् ॥

वन्दे सिन्दूरवर्णाभं लोहिताम्बरभूषितम् ।
रक्ताङ्गरागशोभाढ्यं शोणापुच्छं कपीश्वरम्॥

भजे समीरनन्दनं, सुभक्तचित्तरञ्जनं,
दिनेशरूपभक्षकं, समस्तभक्तरक्षकम् ।
सुकण्ठकार्यसाधकं, विपक्षपक्षबाधकं,
समुद्रपारगामिनं, नमामि सिद्धकामिनम् ॥ १॥

सुशङ्कितं सुकण्ठभुक्तवान् हि यो हितं
वचस्त्वमाशु धैर्य्यमाश्रयात्र वो भयं कदापि न ।
इति प्लवङ्गनाथभाषितं निशम्य वानराऽधिनाथ
आप शं तदा, स रामदूत आश्रयः ॥ २॥

सुदीर्घबाहुलोचनेन, पुच्छगुच्छशोभिना,
भुजद्वयेन सोदरीं निजांसयुग्ममास्थितौ ।
कृतौ हि कोसलाधिपौ, कपीशराजसन्निधौ,
विदहजेशलक्ष्मणौ, स मे शिवं करोत्वरम् ॥ ३॥

सुशब्दशास्त्रपारगं, विलोक्य रामचन्द्रमाः,
कपीश नाथसेवकं, समस्तनीतिमार्गगम् ।
प्रशस्य लक्ष्मणं प्रति, प्रलम्बबाहुभूषितः
कपीन्द्रसख्यमाकरोत्, स्वकार्यसाधकः प्रभुः ॥ ४॥

प्रचण्डवेगधारिणं, नगेन्द्रगर्वहारिणं,
फणीशमातृगर्वहृद्दृशास्यवासनाशकृत् ।
विभीषणेन सख्यकृद्विदेह जातितापहृत्,
सुकण्ठकार्यसाधकं, नमामि यातुधतकम् ॥ ५॥

नमामि पुष्पमौलिनं, सुवर्णवर्णधारिणं
गदायुधेन भूषितं, किरीटकुण्डलान्वितम् ।
सुपुच्छगुच्छतुच्छलङ्कदाहकं सुनायकं
विपक्षपक्षराक्षसेन्द्र-सर्ववंशनाशकम् ॥ ६॥

रघूत्तमस्य सेवकं नमामि लक्ष्मणप्रियं
दिनेशवंशभूषणस्य मुद्रीकाप्रदर्शकम् ।
विदेहजातिशोकतापहारिणम् प्रहारिणम्
सुसूक्ष्मरूपधारिणं नमामि दीर्घरूपिणम् ॥ ७॥

नभस्वदात्मजेन भास्वता त्वया कृता
महासहा यता यया द्वयोर्हितं ह्यभूत्स्वकृत्यतः ।
सुकण्ठ आप तारकां रघूत्तमो विदेहजां
निपात्य वालिनं प्रभुस्ततो दशाननं खलम् ॥ ८॥

इमं स्तवं कुजेऽह्नि यः पठेत्सुचेतसा
नरः कपीशनाथसेवको भुनक्तिसर्वसम्पदः ।
प्लवङ्गराजसत्कृपाकताक्षभाजनस्सदा न
शत्रुतो भयं भवेत्कदापि तस्य नुस्त्विह ॥ ९॥

नेत्राङ्गनन्दधरणीवत्सरेऽनङ्गवासरे ।
लोकेश्वराख्यभट्टेन हनुमत्ताण्डवं कृतम् ॥ १०॥

॥इति श्री हनुमत्ताण्डव स्तोत्रम्॥

## ॥ श्रीहनुमत्स्तोत्रम् ॥

अक्षादिराक्षसहरं दशकण्ठदर्पनिर्मूलनं
रघुवराङ्घ्रिसरोजभक्तम् ।
सीताऽविषह्यघनदुःखनिवारकं तं
वायोः सुतं गिलितभानुमहं नमामि ॥ १॥

मां पश्य पश्य दयया निजदृष्टिपातैः
मां रक्ष रक्ष परितो रिपुदुःखपुञ्जात् ।
वश्यं कुरु त्रिजगतां वसुधाधिपानां
मे देहि देहि महतीं वसुधां श्रियं च ॥ २॥

आपद्भ्यो रक्ष सर्वत्र आञ्जनेय नमोऽस्तु ते ।
बन्धनं छेदयाभुक्तं कपिवर्य नमोऽस्तु ते ॥ ३॥

देहि मे सम्पदो नित्यं त्रिलोचन नमोऽस्तु ते ।
दुष्टरोगान् हन हन रामदूत नमोऽस्तु ते ॥ ४॥

उच्चाटय रिपून् सर्वान् मोहनं कुरु भूभुजाम् ।
विद्वेषिणो मारय त्वं त्रिमूर्त्यात्मक सर्वदा ॥ ५॥

सञ्जीवपर्वतोद्धार मम दुःखं निवारय ।
घोरानुपद्रवान् सर्वान् नाशयाक्षासुरान्तक ॥ ६॥

एवं स्तुत्वा हनुमन्तं नरः श्रद्धासमन्वितः ।
पुत्रपौत्रादिसहितः सर्वान् कामानवाप्नुयात् ॥ ७॥

मर्कटेश महोत्साह सर्वशोकविनाशक ।
शत्रून् संहर मां रक्ष श्रियं दत्वा च मां भर ॥ ८॥

॥इति श्री श्रीहनुमत्स्तोत्रम्॥

## ॥ श्रीआञ्जनेयसहस्रनामस्तोत्रम् ॥

ऋषय ऊचुः

को मन्त्रः किमु तद्ध्यानं तन्नो ब्रूहि यथार्थतः ।

कथासुधारसं पीत्वा न तृप्यामः परन्तप ॥ १॥

वाल्मीकिरुवाच:

मन्त्रं हनुमतो विद्धि भुक्तिमुक्तिप्रदायकम् ।

महारिष्टमहापापसर्वदुःखनिवारणम् ॥ २॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं । हनूमते रामदूताय

लङ्काविध्वंसनायाञ्जनागर्भसम्भूताय

शाकिनी डाकिनी विध्वंसनाय किलिकिलि भुभुकारिणे विभीषणाय

हनुमते देवाय ओं ह्रीं ह्रौं ह्रां ह्रूं फट् स्वाहा ॥

अन्यं हनुमतो मन्त्रं सहस्रं नामसञ्ज्ञितम् ।

जानन्तु ऋषयः सर्वे महादुरितनाशनम् ॥ ३॥

यस्य संस्मरणात् सीतां लब्ध्वा राज्यमकण्टकम् ।

विभीषणाय च ददावात्मानं लब्धवान् यथा ॥ ४॥

ऋषय ऊचुः

सहस्रनामसन्मन्त्रं दुःखाघौघनिवारणम् ।
वाल्मीके ब्रूहि नस्तूर्णं शुश्रूषामः कथां पराम् ॥

वाल्मीकिरुवाच
शृण्वन्तु ऋषयः सर्वे सहस्रनामकं स्तवम् ।
स्तवानामुत्तमं दिव्यं सदर्थस्य प्रकाशकम् ॥

अस्य श्रीहनुमत्सहस्रनामस्तोत्रमहामन्त्रस्य
श्रीरामचन्द्र ऋषिः,
हनूमान् देवता ।
अनुष्टुप् छन्दः ।
ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रः बीजम् ।
श्रीरिति शक्तिः ।
किलिकिलि भ्रूं भ्रूं कारेणेति कीलकम् ।
लङ्काविध्वंसनायेति कवचम् ।
मम सर्वोपद्रवशान्त्यर्थं सर्वकामानां सिद्ध्यर्थं जपे विनियोगः ।

ॐ ऐं ह्रीं हनुमते रामदूताय अङ्गुष्ठाभ्यां नमः ।
लङ्काविध्वंसनाय तर्जनीभ्यां नमः ।
अञ्जनागर्भसम्भूताय मध्यमाभ्यां नमः ।
शाकिनी डाकिनी विध्वंसनाय अनामिकाभ्यां नमः ।

ॐ किलि किलि भ्रूं भ्रूं कारेण विभीषणाय हनूमते देवाय कनिष्ठिकाभ्यां नमः ।

ॐ श्रीं ह्रीं ह्रूं ह्रां फट् स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।

ॐ हनुमते रामदूताय हृदयाय नमः ।

लङ्काविध्वंसनाय शिरसे स्वाहा नमः ।

ॐ ह्रौं अञ्जनागर्भसम्भूताय शिखायै वौषट् ।

ॐ ह्रां शाकिनीडाकिनी ध्वंसनाय कवचाय हुम् ।

ॐ किलि किलि भ्रूं भ्रूं कारेण विभीषणाय हनुमते देवाय नेत्रत्रयाय वौषट् ।

ॐ श्रीं ह्रीं ह्रौं ह्रां फट् स्वाहा । अस्त्राय फट् ।

॥ध्यानम्॥

प्रतप्तस्वर्णवर्णाभं संरक्तारुणलोचनम् ।
सुग्रीवादियुतं ध्यायेत् पीताम्बरसमावृतम् ॥

गोष्पदीकृतवाराशिं पुच्छमस्तकमीश्वरम् ।
ज्ञानमुद्रां च बिभ्राणं सर्वालङ्कारभूषितम् ॥

वामहस्तसमाकृष्टदशास्याननमण्डलम् ।
उद्यद्दक्षिणदोर्दण्डं हनूमन्तं विचिन्तयेत् ॥

हनूमान् श्रीप्रदो वायुपुत्रो रुद्रो नयोऽजरः ।

अमृत्युर्वीरवीरश्च ग्रामवासो जनाश्रयः ॥ १॥

धनदो निर्गुणाकारो वीरो निधिपतिर्मुनिः ।
पिङ्गाक्षो वरदो वाग्मी सीताशोकविनाशनः ॥ २॥

शिवः शर्वः परोऽव्यक्तो व्यक्ताव्यक्तो धराधरः ।
पिङ्गकेशः पिङ्गरोमा श्रुतिगम्यः सनातनः ॥ ३॥

अनादिर्भगवान् दिव्यो विश्वहेतुर्नराश्रयः ।
आरोग्यकर्ता विश्वेशो विश्वनाथो हरीश्वरः ॥ ४॥

भर्गो रामो रामभक्तः कल्याणप्रकृतीश्वरः ।
विश्वम्भरो विश्वमूर्तिर्विश्वाकारोऽथ विश्वपः ॥ ५॥

विश्वात्मा विश्वसेव्योऽथ विश्वो विश्वधरो रविः ।
विश्वचेष्टो विश्वगम्यो विश्वध्येयःकलाधरः ॥ ६॥

प्लवङ्गमः कपिश्रेष्ठो ज्येष्ठो वेद्यो वनेचरः ।
बालो वृद्धो युवा तत्त्वं तत्त्वगम्यः सखा ह्यजः ॥ ७॥

अञ्जनासूनुरव्यग्रो ग्रामस्यान्तो धराधरः ।
भूर्भुवःस्वर्महर्लोको जनोलोकस्तपोऽव्ययः ॥ ८॥

सत्यमोङ्कारगम्यश्च प्रणवो व्यापकोऽमलः ।
शिवधर्मप्रतिष्ठाता रामेष्टः फल्गुनप्रियः ॥ ९॥

गोष्पदीकृतवारीशः पूर्णकामो धरापतिः ।
रक्षोघ्नः पुण्डरीकाक्षः शरणागतवत्सलः ॥ १०॥

जानकीप्राणदाता च रक्षःप्राणापहारकः ।
पूर्णः सत्यः पीतवासा दिवाकरसमप्रभः ॥ ११॥

द्रोणहर्ता शक्तिनेता शक्तिराक्षसमारकः ।
अक्षघ्नो रामदूतश्च शाकिनीजीविताहरः ॥ १२॥

बुभूकारहतारातिर्गर्वपर्वतमर्दनः ।
हेतुस्त्वहेतुः प्रांशुश्च विश्वकर्ता जगद्गुरुः ॥ १३॥

जगन्नाथो जगन्नेता जगदीशो जनेश्वरः ।
जगत्स्त्रितो हरिः श्रीशो गरुडस्मयभञ्जकः ॥ १४॥

पार्थध्वजो वायुपुत्रः सितपुच्छोऽमितप्रभः ।
ब्रह्मपुच्छः परब्रह्मपुच्छो रामेष्टकारकः ॥ १५॥

सुग्रीवादियुतो ज्ञानी वानरो वानरेश्वरः ।

कल्पस्थायी चिरञ्जीवी प्रसन्नश्च सदाशिवः ॥ १६॥

सन्मतिः सद्गतिर्भुक्तिमुक्तिदः कीर्तिदायकः ।
कीर्तिः कीर्तिप्रदश्चैव समुद्रः श्रीप्रदः शिवः ॥ १७॥

उदधिक्रमणो देवः संसारभयनाशनः ।
वालिबन्धनकृद्विश्वजेता विश्वप्रतिष्ठितः ॥ १८॥

लङ्कारिः कालपुरुषो लङ्केशगृहभञ्जनः ।
भूतावासो वासुदेवो वसुस्त्रिभुवनेश्वरः ॥

श्रीरामरूपः कृष्णस्तु लङ्काप्रासादभञ्जनः ।
कृष्णः कृष्णस्तुतः शान्तः शान्तिदो विश्वभावनः ॥ २०॥

विश्वभोक्ताऽथ मारघ्नो ब्रह्मचारी जितेन्द्रियः ।
ऊर्ध्वगो लाङ्गुली माली लाङ्गूलाहतराक्षसः ॥ २१॥

समीरतनुजो वीरो वीरमारो जयप्रदः ।
जगन्मङ्गलदः पुण्यः पुण्यश्रवणकीर्तनः ॥ २२॥

पुण्यकीर्तिः पुण्यगीतिर्जगत्पावनपावनः ।
देवेशोऽमितरोमाऽथ रामभक्तविधायकः ॥ २३॥

ध्याता ध्येयो जगत्साक्षी चेता चैतन्यविग्रहः ।
ज्ञानदः प्राणदः प्राणो जगत्प्राणः समीरणः ॥ २४॥

विभीषणप्रियः शूरः पिप्पलाश्रयसिद्धिदः ।
सिद्धः सिद्धाश्रयः कालः कालभक्षकपूजितः ॥ २५॥

लङ्केशनिधनस्थायी लङ्कादाहक ईश्वरः ।
चन्द्रसूर्याग्निनेत्रश्च कालाग्निः प्रलयान्तकः ॥ २६॥

कपिलः कपिशः पुण्यरातिर्द्वादशराशिगः ।
सर्वाश्रयोऽप्रमेयात्मा रेवत्यादिनिवारकः ॥ २७॥

लक्ष्मणप्राणदाता च सीताजीवनहेतुकः ।
रामध्यायी हृषीकेशो विष्णुभक्तो जटी बली ॥ २८॥

देवारिदर्पहा होता धाता कर्ता जगत्प्रभुः ।
नगरग्रामपालश्च शुद्धो बुद्धो निरन्तरः ॥ २९॥

निरञ्जनो निर्विकल्पो गुणातीतो भयङ्करः ।
हनुमांश्च दुराराध्यस्तपःसाध्यो महेश्वरः ॥ ३०॥

जानकीघनशोकोत्थतापहर्ता पराशरः ।

वाङ्मयः सदसद्रूपः कारणं प्रकृतेः परः ॥ ३१॥

भाग्यदो निर्मलो नेता पुच्छलङ्काविदाहकः ।
पुच्छबद्धो यातुधानो यातुधानरिपुप्रियः ॥ ३२॥

छायापहारी भूतेशो लोकेशः सद्गतिप्रदः ।
प्लवङ्गमेश्वरः क्रोधः क्रोधसंरक्तलोचनः ॥ ३३॥

क्रोधहर्ता तापहर्ता भक्ताभयवरप्रदः ।
भक्तानुकम्पी विश्वेशः पुरुहूतः पुरन्दरः ॥ ३४॥

अग्निर्विभावसुर्भास्वान् यमो निरृतिरेव च ।
वरुणो वायुगतिमान् वायुः कुबेर ईश्वरः ॥ ३५॥

रविश्चन्द्रः कुजः सौम्यो गुरुः काव्यः शनैश्चरः ।
राहुः केतुर्मरुद्दाता धाता हर्ता समीरजः ॥ ३६॥

मशकीकृतदेवारिर्दैत्यारिर्मधूसूदनः ।
कामः कपिः कामपालः कपिलो विश्वजीवनः ॥ ३७॥

भागीरथीपदाम्भोजः सेतुबन्धविशारदः ।
स्वाहा स्वधा हविः कव्यं हव्यवाहः प्रकाशकः ॥ ३८॥

स्वप्रकाशो महावीरो मधुरोऽमितविक्रमः ।
उड्डीनोड्डीनगतिमान् सद्गतिः पुरुषोत्तमः ॥

जगदात्मा जगद्योनिर्जगदन्तो ह्यनन्तरः ।
विपाप्मा निष्कलङ्कोऽथ महान् महदहङ्कृतिः ॥ ४०॥

खं वायुः पृथिवी चापो वह्निर्दिक् काल एकलः ।
क्षेत्रज्ञः क्षेत्रपालश्च पल्वलीकृतसागरः ॥ ४१॥

हिरण्मयः पुराणश्च खेचरो भूचरो मनुः ।
हिरण्यगर्भः सूत्रात्मा राजराजो विशां पतिः ॥ ४२॥

वेदान्तवेद्य उद्गीथो वेदाङ्गो वेदपारगः ।
प्रतिग्रामस्थितः सद्यः स्फूर्तिदाता गुणाकरः ॥ ४३॥

नक्षत्रमाली भूतात्मा सुरभिः कल्पपादपः ।
चिन्तामणिर्गुणनिधिः प्रजाद्वारमनुत्तमः ॥ ४४॥

पुण्यश्लोकः पुरारातिः मतिमान् शर्वरीपतिः ।
किल्किलारावसन्त्रस्तभूतप्रेतपिशाचकः ॥ ४५॥

ऋणत्रयहरः सूक्ष्मः स्थूलः सर्वगतिः पुमान् ।

अपस्मारहरः स्मर्ता श्रुतिर्गाथा स्मृतिर्मनुः ॥ ४६॥

स्वर्गद्वारं प्रजाद्वारं मोक्षद्वारं यतीश्वरः ।
नादरूपं परं ब्रह्म ब्रह्म ब्रह्मपुरातनः ॥ ४७॥

एकोऽनेको जनः शुक्लः स्वयञ्ज्योतिरनाकुलः ।
ज्योतिर्ज्योतिरनादिश्च सात्विको राजसस्तमः ॥ ४८॥

तमोहर्ता निरालम्बो निराकारो गुणाकरः ।
गुणाश्रयो गुणमयो बृहत्कायो बृहद्यशाः ॥

बृहद्धनुर्बृहत्पादो बृहन्मूर्धा बृहत्स्वनः ।
बृहत्कर्णो बृहन्नासो बृहद्बाहुर्बृहत्तनुः ॥ ५०॥

बृहद्गलो बृहत्कायो बृहत्पुच्छो बृहत्करः ।
बृहद्गतिर्बृहत्सेवो बृहल्लोकफलप्रदः ॥ ५१॥

बृहद्भक्तिर्बृहद्वाञ्छाफलदो बृहदीश्वरः ।
बृहल्लोकनुतो द्रष्टा विद्यादाता जगद्गुरुः ॥ ५२॥

देवाचार्यः सत्यवादी ब्रह्मवादी कलाधरः ।
सप्तपातालगामी च मलयाचलसंश्रयः ॥ ५३॥

उत्तराशास्थितः श्रीशो दिव्यौषधिवशः खगः ।
शाखामृगः कपीन्द्रोऽथ पुराणः प्राणचञ्चुरः ॥ ५४॥

चतुरो ब्राह्मणो योगी योगिगम्यः परोऽवरः ।
अनादिनिधनो व्यासो वैकुण्ठः पृथिवीपतिः ॥ ५५॥

अपराजितो जितारातिः सदानन्दद ईशिता ।
गोपालो गोपतिर्योद्धा कलिः स्फालः परात्परः ॥ ५६॥

मनोवेगी सदायोगी संसारभयनाशनः ।
तत्त्वदाताऽथ तत्त्वज्ञस्तत्त्वं तत्त्वप्रकाशकः ॥ ५७॥

शुद्धो बुद्धो नित्ययुक्तो भक्ताकारो जगद्रथः ।
प्रलयोऽमितमायश्च मायातीतो विमत्सरः ॥ ५८॥

मायानिर्जितरक्षाश्च मायानिर्मितविष्टपः ।
मायाश्रयश्च निलेर्पो मायानिर्वर्तकः सुखी ॥

सुखी(खं) सुखप्रदो नागो महेशकृतसंस्तवः ।
महेश्वरः सत्यसन्धः शरभः कलिपावनः ॥ ६०॥

रसो रसज्ञः सन्मानो रूपं चक्षुः श्रुती रवः ।

घ्राणं गन्धः स्पर्शनं च स्पर्शो हिङ्कारमानगः ॥ ६१॥

नेति नेतीति गम्यश्च वैकुण्ठभजनप्रियः ।
गिरिशो गिरिजाकान्तो दुर्वासाः कविरङ्गिराः ॥ ६२॥

भृगुर्वसिष्ठश्च्यवनो नारदस्तुम्बुरुर्हरः ।
विश्वक्षेत्रं विश्वबीजं विश्वनेत्रं च विश्वपः ॥ ६३॥

याजको यजमानश्च पावकः पितरस्तथा ।
श्रद्धा बुद्धिः क्षमा तन्द्रा मन्त्रो मन्त्रयिता सुरः ॥ ६४॥

राजेन्द्रो भूपती रूढो माली संसारसारथिः ।
नित्यः सम्पूर्णकामश्च भक्तकामधुगुत्तमः ॥ ६५॥

गणपः केशवो भ्राता पिता माताऽथ मारुतिः ।
सहस्रमूर्धा सहस्रास्यः सहस्राक्षः सहस्रपात् ॥ ६६॥

कामजित् कामदहनः कामः काम्यफलप्रदः ।
मुद्रोपहारी रक्षोघ्नः क्षितिभारहरो बलः ॥ ६७॥

नखदंष्ट्रायुधो विष्णुभक्तो भक्ताभयप्रदः ।
दर्पहा दर्पदो दंष्ट्राशतमूर्तिरमूर्तिमान् ॥ ६८॥

महानिधिर्महाभागो महाभर्गो महर्द्धिदः ।
महाकारो महायोगी महातेजा महाद्युतिः ॥

महाकर्मा महानादो महामन्त्रो महामतिः ।
महाशमो महोदारो महादेवात्मको विभुः ॥ ७०॥

रुद्रकर्मा क्रूरकर्मा रत्ननाभः कृतागमः ।
अम्भोधिलङ्घनः सिद्धः सत्यधर्मा प्रमोदनः ॥ ७१॥

जितामित्रो जयः सोमो विजयो वायुवाहनः ।
जीवो धाता सहस्रांशुर्मुकुन्दो भूरिदक्षिणः ॥ ७२॥

सिद्धार्थः सिद्धिदः सिद्धः सङ्कल्पः सिद्धिहेतुकः ।
सप्तपातालचरणः सप्तर्षिगणवन्दितः ॥ ७३॥

सप्ताब्धिलङ्घनो वीरः सप्तद्वीपोरुमण्डलः ।
सप्ताङ्गराज्यसुखदः सप्तमातृनिषेवितः ॥ ७४॥

सप्तलोकैकमकुटः सप्तहोत्रः स्वराश्रयः ।
सप्तसामोपगीतश्च सप्तपातालसंश्रयः ॥ ७५॥

सप्तच्छन्दोनिधिः सप्तच्छन्दः सप्तजनाश्रयः ।

मेधादः कीर्तिदः शोकहारी दौर्भाग्यनाशनः ॥ ७६॥

सर्ववश्यकरो गर्भदोषहा पुत्रपौत्रदः ।
प्रतिवादिमुखस्तम्भो रुष्टचित्तप्रसादनः ॥ ७७॥

पराभिचारशमनो दुःखहा बन्धमोक्षदः ।
नवद्वारपुराधारो नवद्वारनिकेतनः ॥ ७८॥

नरनारायणस्तुत्यो नवनाथमहेश्वरः ।
मेखली कवची खड्गी भ्राजिष्णुर्जिष्णुसारथिः ॥

बहुयोजनविस्तीर्णपुच्छः पुच्छहतासुरः ।
दुष्टहन्ता नियमिता पिशाचग्रहशातनः ॥ ८०॥

बालग्रहविनाशी च धर्मनेता कृपाकरः ।
उग्रकृत्यश्चोग्रवेग उग्रनेत्रः शतक्रतुः ॥ ८१॥

शतमन्युस्तुतः स्तुत्यः स्तुतिः स्तोता महाबलः ।
समग्रगुणशाली च व्यग्रो रक्षोविनाशनः ॥ ८२॥

रक्षोऽग्निदावो ब्रह्मेशः श्रीधरो भक्तवत्सलः ।
मेघनादो मेघरूपो मेघवृष्टिनिवारणः ॥ ८३॥

मेघजीवनहेतुश्च मेघश्यामः परात्मकः ।
समीरतनयो धाता तत्त्वविद्याविशारदः ॥ ८४॥

अमोघोऽमोघवृष्टिश्चाभीष्टदोऽनिष्टनाशनः ।
अर्थोऽनर्थापहारी च समर्थो रामसेवकः ॥ ८५॥

अर्थी धन्योऽसुरारातिः पुण्डरीकाक्ष आत्मभूः ।
सङ्कर्षणो विशुद्धात्मा विद्याराशिः सुरेश्वरः ॥ ८६॥

अचलोद्धारको नित्यः सेतुकृद्रामसारथिः ।
आनन्दः परमानन्दो मत्स्यः कूर्मो निधिः शयः ॥ ८७॥

वराहो नारसिंहश्च वामनो जमदग्निजः ।
रामः कृष्णः शिवो बुद्धः कल्की रामाश्रयो हरिः ॥ ८८॥

नन्दी भृङ्गी च चण्डी च गणेशो गणसेवितः ।
कर्माध्यक्षः सुरारामो विश्रामो जगतीपतिः ॥

जगन्नाथः कपीशश्च सर्वावासः सदाश्रयः ।
सुग्रीवादिस्तुतो दान्तः सर्वकर्मा प्लवङ्गमः ॥ ९०॥

नखदारितरक्षश्च नखयुद्धविशारदः ।

कुशलः सुधनः शेषो वासुकिस्तक्षकस्तथा ॥ ९१॥

स्वर्णवर्णो बलाढ्यश्च पुरुजेताऽघनाशनः ।
कैवल्यदीपः कैवल्यो गरुडः पन्नगो गुरुः ॥ ९२॥

क्लीक्लीरावहतारातिगर्वः पर्वतभेदनः ।
वज्राङ्गो वज्रवक्त्रश्च भक्तवज्रनिवारकः ॥ ९३॥

नखायुधो मणिग्रीवो ज्वालामाली च भास्करः ।
प्रौढप्रतापस्तपनो भक्ततापनिवारकः ॥ ९४॥

शरणं जीवनं भोक्ता नानाचेष्टोऽथ चञ्चलः ।
स्वस्थस्त्वस्वास्थ्यहा दुःखशातनः पवनात्मजः ॥ ९५॥

पवनः पावनः कान्तो भक्ताङ्गः सहनो बलः ।
मेघनादरिपुर्मेघनादसंहृतराक्षसः ॥ ९६॥

क्षरोऽक्षरो विनीतात्मा वानरेशः सताङ्गतिः ।
श्रीकण्ठः शितिकण्ठश्च सहायः सहनायकः ॥ ९७॥

अस्थूलस्त्वनणुर्भर्गो देवसंसृतिनाशनः ।
अध्यात्मविद्यासारश्चाप्यध्यात्मकुशलः सुधीः ॥ ९८॥

अकल्मषः सत्यहेतुः सत्यदः सत्यगोचरः ।
सत्यगर्भः सत्यरूपः सत्यः सत्यपराक्रमः ॥ ९९॥

अञ्जनाप्राणलिङ्गं च वायुवंशोद्भवः श्रुतिः ।
भद्ररूपो रुद्ररूपः सुरूपश्चित्ररूपधृक् ॥ १००॥

मैनाकवन्दितः सूक्ष्मदर्शनो विजयो जयः ।
क्रान्तदिङ्मण्डलो रुद्रः प्रकटीकृतविक्रमः ॥ १०१॥

कम्बुकण्ठः प्रसन्नात्मा ह्रस्वनासो वृकोदरः ।
लम्बोष्ठः कुण्डली चित्रमाली योगविदां वरः ॥ १०२॥

विपश्चित् कविरानन्दविग्रहोऽनल्पनाशनः ।
फाल्गुनीसूनुरव्यग्रो योगात्मा योगतत्परः ॥ १०३॥

योगविद्योगकर्ता च योगयोनिर्दिगम्बरः ।
अकारादिक्षकारान्तवर्णनिर्मितविग्रहः ॥ १०४॥

उलूखलमुखः सिद्धसंस्तुतः परमेश्वरः ।
श्लिष्टजङ्घः श्लिष्टजानुः श्लिष्टपाणिः शिखाधरः ॥ १०५॥

सुशर्माऽमितधर्मा च नारायणपरायणः ।

जिष्णुर्भविष्णू रोचिष्णुर्ग्रसिष्णुः स्थाणुरेव च ॥ १०६॥

हरी रुद्रानुकृद्वृक्षकम्पनो भूमिकम्पनः ।
गुणप्रवाहः सूत्रात्मा वीतरागः स्तुतिप्रियः ॥ १०७॥

नागकन्याभयध्वंसी कृतपूर्णः कपालभृत् ।
अनुकूलोऽक्षयोऽपायोऽनपायो वेदपारगः ॥ १०८॥

अक्षरः पुरुषो लोकनाथस्त्र्यक्षः प्रभुर्दृढः ।
अष्टाङ्गयोगफलभूः सत्यसन्धः पुरुष्टुतः ॥ १०९॥

श्मशानस्थाननिलयः प्रेतविद्रावणक्षमः ।
पञ्चाक्षरपरः पञ्चमातृको रञ्जनो ध्वजः ॥ ११०॥

योगिनीवृन्दवन्द्यश्रीः शत्रुघ्नोऽनन्तविक्रमः ।
ब्रह्मचारीन्द्रियवपुर्धृतदण्डो दशात्मकः ॥ १११॥

अप्रपञ्चः सदाचारः शूरसेनो विदारकः ।
बुद्धः प्रमोद आनन्दः सप्तजिह्वपतिर्धरः ॥ ११२॥

नवद्वारपुराधारः प्रत्यग्रः सामगायनः ।
षट्चक्रधामा स्वर्लोकभयहृन्मानदो मदः ॥ ११३॥

सर्ववश्यकरः शक्तिरनन्तोऽनन्तमङ्गलः ।
अष्टमूर्तिधरो नेता विरूपः स्वरसुन्दरः ॥ ११४॥

धूमकेतुर्महाकेतुः सत्यकेतुर्महारथः ।
नन्दीप्रियः स्वतन्त्रश्च मेखली डमरुप्रियः ॥ ११५॥

लोहिताङ्गः समिद्वह्निः षड्तुः शर्व ईश्वरः ।
फलभुक् फलहस्तश्च सर्वकर्मफलप्रदः ॥ ११६॥

धर्माध्यक्षो धर्मफलो धर्मो धर्मप्रदोऽर्थदः ।
पञ्चविंशतितत्त्वज्ञस्तारको ब्रह्मतत्परः ॥ ११७॥

त्रिमार्गवसतिर्भीमः सर्वदुष्टनिबर्हणः ।
ऊर्जःस्वामी जलस्वामी शूली माली निशाकरः ॥ ११८॥

रक्ताम्बरधरो रक्तो रक्तमाल्यविभूषणः ।
वनमाली शुभाङ्गश्च श्वेतः श्वेताम्बरो युवा ॥ ११९॥

जयोऽजेयपरीवारः सहस्रवदनः कविः ।
शाकिनीडाकिनीयक्षरक्षोभूतप्रभञ्जनः ॥ १२०॥

सद्योजातः कामगतिर्ज्ञानमूर्तिर्यशस्करः ।

शम्भुतेजाः सार्वभौमो विष्णुभक्तः प्लवङ्गमः ॥ १२१॥

चतुर्णवतिमन्त्रज्ञः पौलस्त्यबलदर्पहा ।
सर्वलक्ष्मीप्रदः श्रीमानङ्गदप्रियवर्धनः ॥ १२२॥

स्मृतिबीजं सुरेशानः संसारभयनाशनः ।
उत्तमः श्रीपरीवारः श्रीभूरुग्रश्च कामधुक् ॥ १२३॥

सदागतिर्मातरिश्वा रामपादाब्जषट्पदः ।
नीलप्रियो नीलवर्णो नीलवर्णप्रियः सुहृत् ॥ १२४॥

रामदूतो लोकबन्धुरन्तरात्मा मनोरमः ।
श्रीरामध्यानकृद्वीरः सदा किम्पुरुषस्तुतः ॥ १२५॥

रामकार्यान्तरङ्गश्च शुद्धिर्गतिरनामयः ।
पुण्यश्लोकः परानन्दः परेशप्रियसारथिः ॥ १२६॥

लोकस्वामी मुक्तिदाता सर्वकारणकारणः ।
महाबलो महावीरः पारावारगतिर्गुरुः ॥ १२७॥

तारको भगवांस्त्राता स्वस्तिदाता सुमङ्गलः ।
समस्तलोकसाक्षी च समस्तसुरवन्दितः ।
अईतासमेतश्रीरामपादसेवाधुरन्धरः ॥ १२८॥

इदं नामसहस्रं तु योऽधीते प्रत्यहं नरः ।
दुःखौघो नश्यते क्षिप्रं सम्पत्तिर्वर्धते चिरम् ।
वश्यं चतुर्विधं तस्य भवत्येव न संशयः ॥ १२९॥

राजानो राजपुत्राश्च राजकीयाश्च मन्त्रिणः ।
त्रिकालं पठनादस्य दृश्यन्ते च त्रिपक्षतः ॥ १३०॥

अश्वत्थमूले जपतां नास्ति वैरिकृतं भयम् ।
त्रिकालपठनादस्य सिद्धिः स्यात् करसंस्थिता ॥ १३१॥

ब्राह्मे मुहूर्ते चोत्थाय प्रत्यहं यः पठेन्नरः ।
ऐहिकामुष्मिकान् सोऽपि लभते नात्र संशयः ॥ १३२॥

सङ्ग्रामे सन्निविष्टानां वैरिविद्रावणं भवेत् ।
ज्वरापस्मारशमनं गुल्मादिव्याधिवारणम् ॥ १३३॥

साम्राज्यसुखसम्पत्तिदायकं जपतां नृणाम् ।
य इदं पठते नित्यं पाठयेद्वा समाहितः ।
सर्वान् कामानवाप्नोति वायुपुत्रप्रसादतः ॥ १३४॥

॥ श्री आञ्जनेयसहस्रनामस्तोत्रं हनुमत्सहस्रनामस्तोत्रं च सम्पूर्णम् ॥

## ॥ श्रीआञ्जनेय द्वादशनामस्तोत्रम् ॥

हनुमानञ्जनासूनुः वायुपुत्रो महाबलः ।
रामेष्टः फल्गुणसखः पिङ्गाक्षोऽमितविक्रमः ॥ १॥

उदधिक्रमणश्चैव सीताशोक विनाशकः ।
लक्ष्मण प्राणदाताच दशग्रीवस्य दर्पहा ॥ २॥

द्वादशैतानि नामानि कपीन्द्रस्य महात्मनः ।
स्वापकाले पठेन्नित्यं यात्राकाले विशेषतः ।
तस्यमृत्यु भयंनास्ति सर्वत्र विजयीभवेत् ॥

## ॥ श्रीआञ्जनेयसहस्रनामावली ॥

ॐ हनुमते नमः ।
ॐ श्री प्रदाय नमः ।
ॐ वायु पुत्राय नमः ।
ॐ रुद्राय नमः ।
ॐ अनघाय नमः ।
ॐ अजराय नमः ।
ॐ अमृत्युर्वीरवीराय नमः ।
ॐ ग्रामावासाय नमः ।
ॐ जनाश्रयाय नमः ।
ॐ धनदाय नमः ।
ॐ निर्गुणाय नमः ।
ॐ शूराय नमः ।
ॐ वीराय नमः ।
ॐ निधिपतिर्मुनये नमः ।
ॐ पि□न्गाक्षाय नमः ।
ॐ वरदाय नमः ।
ॐ वाग्मी सीता शोक
विनाशकाय नमः ।
ॐ शिवाय नमः ।
ॐ शर्वाय नमः ।
ॐ पराय नमः ।
ॐ अव्यक्ताय नमः ।
ॐ व्यक्ताव्यक्ताय नमः ।
ॐ धराधराय नमः ।
ॐ पि□न्गकेशाय नमः ।
ॐ पिन्गारोमा श्रुतिगम्याय नमः ।
ॐ सनातनाय नमः ।
ॐ अनादिर्भगवानाय नमः ।
ॐ देवाय नमः ।
ॐ विश्व हेतुर्निराश्रयाय नमः ।
ॐ आरोग्यकर्ता विश्वेशाय नमः।
ॐ विश्वनाथाय नमः ।
ॐ हरीश्वराय नमः ।
ॐ भर्गाय नमः ।
ॐ रामाय नमः ।
ॐ राम भक्ताय नमः ।

ॐ कल्याणाय नमः ।
ॐ प्रकृति स्थिराय नमः ।
ॐ विश्वम्भराय नमः ।
ॐ विश्वमूर्तये नमः ।
ॐ विश्वाकाराय नमः ।
ॐ विश्वपाय नमः ।
ॐ विश्वात्मा विश्वसेव्याय नमः ।
ॐ अथ विश्वाय नमः ।
ॐ विश्वहराय नमः ।
ॐ रवये नमः ।
ॐ विश्वचेष्टाय नमः ।
ॐ विश्वगम्याय नमः ।
ॐ विश्वध्येयाय नमः ।
ॐ कलाधराय नमः ।
ॐ प्लवङ्गमाय नमः ।
ॐ कपिश्रेष्टाय नमः ।
ॐ वेदवेद्याय नमः ।
ॐ वनेचराय नमः ।
ॐ बालाय नमः ।
ॐ वृद्धाय नमः ।
ॐ युवा तत्त्वाय नमः ।
ॐ तत्त्वगम्याय नमः ।
ॐ सुखाय नमः ।
ॐ ह्यजाय नमः ।
ॐ अन्जनासूनुरव्यग्राय नमः ।
ॐ ग्राम ख्याताय नमः ।
ॐ धराधराय नमः ।
ॐ भूर्भुवस्स्वर्महर्लोकाय नमः ।
ॐ जनाय नमः ।
ॐ लोकस्तपाय नमः ।
ॐ अव्ययाय नमः ।
ॐ सत्यमोम्कार गम्याय नमः ।
ॐ प्रणवाय नमः ।
ॐ व्यापकाय नमः ।
ॐ अमलाय नमः ।
ॐ शिवाय नमः ।
ॐ धर्म प्रतिष्ठाता रामेष्टाय नमः
ॐ फल्गुणप्रियाय नमः ।
ॐ गोष्पदीकृतवारीशाय नमः ।
ॐ पूर्णकामाय नमः ।

ॐ धरापतये नमः ।

ॐ रक्षोघ्नाय नमः ।

ॐ पुण्डरीकाक्षाय नमः ।

ॐ शरणागतवत्सलाय नमः ।

ॐ जानकी प्राण दाता रक्षाय नमः ।

ॐ प्राणापहारकाय नमः ।

ॐ पूर्णसत्त्वाय नमः ।

ॐ पीतवासा दिवाकर समप्रभाय नमः ।

ॐ द्रोणहर्ता शक्तिनेता शक्ति राक्षस मारकाय नमः ।

ॐ अक्षघ्नाय नमः ।

ॐ रामदूताय नमः ।

ॐ शाकिनी जीव हारकाय नमः

ॐ भुभुकार हतारातिर्दुष्ट गर्व प्रमर्दनाय नमः ।

ॐ हेतवे नमः ।

ॐ सहेतवे नमः ।

ॐ प्रंशवे नमः ।

ॐ विश्वभर्ता जगद्गुरवे नमः ।

ॐ जगत्त्राता जगन्नथाय नमः ।

ॐ जगदीशाय नमः ।

ॐ जनेश्वराय नमः ।

ॐ जगत्पिता हरये नमः ।

ॐ श्रीशाय नमः ।

ॐ गरुडस्मयभञ्जनाय नमः ।

ॐ पार्थध्वजाय नमः ।

ॐ वायुसुताय नमः ।

ॐ अमित पुच्छाय नमः ।

ॐ अमित प्रभाय नमः ।

ॐ ब्रह्म पुच्छाय नमः ।

ॐ परब्रह्मापुच्छाय नमः ।

ॐ रामेष्ट एवाय नमः ।

ॐ सुग्रीवादि युताय नमः ।

ॐ ज्ञानी वानराय नमः ।

ॐ वानरेश्वराय नमः ।

ॐ कल्पस्थायी चिरञ्जीवी प्रसन्नाय नमः ।

ॐ सदा शिवाय नमः ।

ॐ सन्नतये नमः ।

ॐ सद्गतये नमः ।

ॐ भुक्ति मुक्तिदाय नमः ।

ॐ कीर्ति दायकाय नमः ।

ॐ कीर्तये नमः ।

ॐ कीर्तिप्रदाय नमः ।

ॐ इव समुद्राय नमः ।

ॐ श्रीप्रदाय नमः ।

ॐ शिवाय नमः ।

ॐ उदधिक्रमणाय नमः ।

ॐ देवाय नमः ।

ॐ संसार भय नाशनाय नमः ।

ॐ वार्धि बन्धनकृद् विश्व जेता विश्व प्रतिष्ठिताय नमः ।

ॐ लङ्कारये नमः ।

ॐ कालपुरुषाय नमः ।

ॐ लङ्केश गृह भञ्जनाय नमः ।

ॐ भूतावासाय नमः ।

ॐ वासुदेवाय नमः ।

ॐ वसुस्त्रिभुवनेश्वराय नमः ।

ॐ श्रीरामदूताय नमः ।

ॐ कृष्णाय नमः ।

ॐ लङ्काप्रासादभञ्जकाय नमः ।

ॐ कृष्णाय नमः ।

ॐ कृष्ण स्तुताय नमः ।

ॐ शान्ताय नमः ।

ॐ शान्तिदाय नमः ।

ॐ विश्वपावनाय नमः ।

ॐ विश्व भोक्ता मारघ्नाय नमः ।

ॐ ब्रह्मचारी जितेन्द्रियाय नमः ।

ॐ ऊर्ध्वगाय नमः ।

ॐ लान्गुली मालि लान्गूल हत राक्षसाय नमः ।

ॐ समीर तनुजाय नमः ।

ॐ वीराय नमः ।

ॐ वीरमाराय नमः ।

ॐ जयप्रदाय नमः ।

ॐ जगन्मन्गलदाय नमः ।

ॐ पुण्याय नमः ।

ॐ पुण्य श्रवण कीर्तनाय नमः ।

ॐ पुण्यकीर्तये नमः ।

ॐ पुण्य गतिर्जगत्पावन पावनाय नमः ।

ॐ देवेशाय नमः ।

ॐ जितमाराय नमः ।

ॐ राम भक्ति विधायकाय नमः।

ॐ ध्याता ध्येयाय नमः ।

ॐ भगाय नमः ।

ॐ साक्षी चेत चैतन्य विग्रहाय नमः ।

ॐ ञानदाय नमः ।

ॐ प्राणदाय नमः ।

ॐ प्राणाय नमः ।

ॐ जगत्प्राणाय नमः ।

ॐ समीरणाय नमः ।

ॐ विभीषण प्रियाय नमः ।

ॐ शूराय नमः ।

ॐ पिप्पलायन सिद्धिदाय नमः ।

ॐ सुहृताय नमः ।

ॐ सिद्धाश्रयाय नमः ।

ॐ कालाय नमः ।

ॐ काल भक्षक भञ्जनाय नमः ।

ॐ लङ्केश निधनाय नमः ।

ॐ स्थायी लङ्का दाहक ईश्वराय नमः ।

ॐ चन्द्र सूर्य अग्नि नेत्राय नमः ।

ॐ कालाग्नये नमः ।

ॐ प्रलयान्तकाय नमः ।

ॐ कपिलाय नमः ।

ॐ कपीशाय नमः ।

ॐ पुण्यराशये नमः ।

ॐ द्वादश राशिगाय नमः ।

ॐ सर्वाश्रयाय नमः ।

ॐ अप्रमेयत्मा रेवत्यादि निवारकाय नमः ।

ॐ लक्ष्मण प्राणदाता सीता जीवन हेतुकाय नमः ।

ॐ रामध्येयाय नमः ।

ॐ हृषीकेशाय नमः ।

ॐ विष्णु भक्ताय नमः ।

ॐ जटी बली

ॐ देवारिदर्पहा होता कर्ता हर्ता जगत्प्रभवे नमः ।

ॐ नगर ग्राम पालाय नमः ।

ॐ शुद्धाय नमः ।

ॐ बुद्धाय नमः ।

ॐ निरन्तराय नमः ।

ॐ निरञ्जनाय नमः ।

ॐ निर्विकल्पाय नमः ।

ॐ गुणातीताय नमः ।

ॐ भयङ्कराय नमः ।

ॐ हनुमां: दुराराध्याय नमः ।

ॐ तपस्साध्याय नमः ।

ॐ महेश्वराय नमः ।

ॐ जानकी घनशोकोत्थतापहर्ता परात्पराय नमः ।

ॐ वाडम्भ्याय नमः ।

ॐ सदसद्रूपाय नमः ।

ॐ कारणाय नमः ।

ॐ प्रकृतेः पराय नमः ।

ॐ भाग्यदाय नमः ।

ॐ निर्मलाय नमः ।

ॐ नेता पुच्छ लङ्का विदाहकाय नमः ।

ॐ पुच्छबद्धाय नमः ।

ॐ यातुधानाय नमः ।

ॐ यातुधान रिपुप्रियाय नमः ।

ॐ चायापहारी भूतेशाय नमः ।

ॐ लोकेश सद्गति प्रदाय नमः ।

ॐ प्लवङ्गमेश्वराय नमः ।

ॐ क्रोधाय नमः ।

ॐ क्रोध संरक्तलोचनाय नमः ।

ॐ क्रोध हर्ता ताप हर्ता भाक्ताभय वरप्रदाय नमः ।

ॐ ।

ॐ भक्तानुकम्पी विश्वेशाय नमः।

ॐ पुरुहूताय नमः ।

ॐ पुरन्दराय नमः ।

ॐ अग्निर्विभावसुर्भास्वानाय नमः

ॐ यमाय नमः ।

ॐ निष्कृतिरेवचाय नमः ।

ॐ वरुणाय नमः ।

ॐ वायुगतिमानाय नमः ।

ॐ वायवे नमः ।

ॐ कौबेर ईश्वराय नमः ।

ॐ रवये नमः ।

ॐ न्द्राय नमः ।

ॐ कुजाय नमः ।

ॐ सौम्याय नमः ।

ॐ गुरवे नमः ।

ॐ काव्याय नमः ।

ॐ शनैश्चराय नमः ।

ॐ राहवे नमः ।

ॐ केतुर्मरुद्धाता धर्ता हर्ता समीरजाय नमः ।

ॐ मशकीकृत देवारि दैत्यारये नमः ।

ॐ मधुसूदनाय नमः ।

ॐ कामाय नमः ।

ॐ कपये नमः ।

ॐ कामपालाय नमः ।

ॐ कपिलाय नमः ।

ॐ विश्व जीवनाय नमः ।

ॐ भागीरथी पदाम्भोजाय नमः

ॐ सेतुबन्ध विशारदाय नमः ।

ॐ स्वाहा स्वधा हवये नमः ।

ॐ कव्याय नमः ।

ॐ हव्यवाह प्रकाशकाय नमः ।

ॐ स्वप्रकाशाय नमः ।

ॐ महावीराय नमः ।

ॐ लघवे नमः ।

ॐ अमित विक्रमाय नमः ।

ॐ प्रडीनोड्डीनगतिमानाय नमः

ॐ सद्गतये नमः ।

ॐ पुरुषोत्तमाय नमः ।

ॐ जगदात्मा जगध्योनिर्जगदन्ताय नमः ।

ॐ ह्यनन्तकाय नमः ।

ॐ विपाप्मा निष्कलङ्काय नमः ।

ॐ महानाय नमः ।

ॐ मदहङ्कृतये नमः ।

ॐ खाय नमः ।

ॐ वायवे नमः ।

ॐ पृथ्वी ह्यापाय नमः ।

ॐ वह्निर्दिक्पाल एवाय नमः ।

ॐ क्षेत्रज्ञाय नमः ।

ॐ क्षेत्र पालाय नमः ।

ॐ पल्वलीकृत सागराय नमः ।

ॐ हिरण्मयाय नमः ।

ॐ पुराणाय नमः ।

ॐ खेचराय नमः ।

ॐ भुचराय नमः ।

ॐ मनवे नमः ।

ॐ हिरण्यगर्भाय नमः ।

ॐ सूत्रात्मा राजराजाय नमः ।

ॐ विशाम्पतये नमः ।

ॐ वेदान्त वेद्याय नमः ।

ॐ उद्गीथाय नमः ।

ॐ वेदवेदङ्ग पारगाय नमः ।

ॐ प्रति ग्रामस्थिताय नमः ।

ॐ साध्याय नमः ।

ॐ स्फूर्ति दात गुणाकराय नमः

ॐ नक्षत्र माली भूतात्मा सुरभये नमः ।

ॐ कल्प पादपाय नमः ।

ॐ चिन्ता मणिर्गुणनिधये नमः ।

ॐ प्रजा पतिरनुत्तमाय नमः ।

ॐ पुण्यश्लोकाय नमः ।

ॐ पुरारातिर्ज्योतिष्मानाय नमः

ॐ शर्वरीपतये नमः ।

ॐ किलिकिल्यारवत्रस्तप्रेतभूतपिशाचकाय नमः ।

ॐ रुणत्रय हराय नमः ।

ॐ सूक्ष्माय नमः ।

ॐ स्तूलाय नमः ।

ॐ सर्वगतये नमः ।

ॐ पुमानाय नमः ।

ॐ अपस्मार हराय नमः ।

ॐ स्मर्ता श्रुतिर्गाथा स्मृतिर्मनवे नमः ।

ॐ स्वर्ग द्वाराय नमः ।

ॐ प्रजा द्वाराय नमः ।

ॐ मोक्ष द्वाराय नमः ।

ॐ कपीश्वराय नमः ।

ॐ नाद रूपाय नमः ।

ॐ पर ब्रह्म ब्रह्म ब्रह्म पुरातनाय नमः ।

ॐ एकाय नमः ।

ॐ नैकाय नमः ।

ॐ जनाय नमः ।

ॐ शुक्लाय नमः ।

ॐ स्वयाय नमः ।

ॐ ज्योतिर्नाकुलाय नमः ।

ॐ ज्योतये नमः ।

ॐ ज्योतिरनादये नमः ।

ॐ सात्त्विकाय नमः ।

ॐ राजसत्तमाय नमः ।

ॐ तमाय नमः ।

ॐ हर्ता निरालम्बाय नमः ।

ॐ निराकाराय नमः ।

ॐ गुणाकराय नमः ।

ॐ गुणाश्रयाय नमः ।

ॐ गुणमयाय नमः ।

ॐ बृहत्कायाय नमः ।

ॐ बृहद्यशाय नमः ।

ॐ बृहद्धनुर्बृहत्पादाय नमः ।

ॐ बृहनाय नमः ।

ॐ मूर्धा बृहत्स्वनाय नमः ।

ॐ बृहताय नमः ।

ॐ कर्णाय नमः ।

ॐ बृहन्नासाय नमः ।

ॐ बृहन्नेत्राय नमः ।

ॐ बृहद्गलाय नमः ।

ॐ बृहध्यन्त्राय नमः ।

ॐ बृहत्वेष्टाय नमः ।

ॐ बृहताय नमः ।

ॐ पुच्छाय नमः ।

ॐ बृहत् कराय नमः ।

ॐ बृहत्गतिर्बृहत्सेव्याय नमः ।

ॐ बृहल्लोक फलप्रदाय नमः ।

ॐ बृहच्छक्तिर्बृहद्वाञ्छा फलदाय नमः ।

ॐ बृहदीश्वराय नमः ।

ॐ बृहल्लोक नुताय नमः ।

ॐ द्रष्टा विद्या दात जगद् गुरवे नमः ।

ॐ देवाचार्याय नमः ।

ॐ सत्य वादी ब्रह्म वादी कलाधराय नमः ।

ॐ सप्त पातालगामी मलयाचल संश्रयाय नमः ।

ॐ उत्तराशास्थिताय नमः ।

ॐ श्रीदाय नमः ।

ॐ दिव्य औषधि वशाय नमः ।

ॐ खगाय नमः ।

ॐ शाखामृगाय नमः ।

ॐ कपीन्द्राय नमः ।

ॐ पुराणाय नमः ।

ॐ श्रुति सञ्चराय नमः ।

ॐ चतुराय नमः ।

ॐ ब्राह्मणाय नमः ।

ॐ योगी योगगम्याय नमः ।

ॐ परात्पराय नमः ।

ॐ अनदि निधनाय नमः ।

ॐ व्यासाय नमः ।

ॐ वैकुण्ठाय नमः ।

ॐ पृथ्वी पतये नमः ।

ॐ पराजिताय नमः ।

ॐ जितारातये नमः ।

ॐ सदानन्दाय नमः ।

ॐ ईशिताय नमः ।

ॐ गोपालाय नमः ।

ॐ गोपतिर्गोप्ता कलये नमः ।

ॐ कालाय नमः ।

ॐ परात्पराय नमः ।

ॐ मनोवेगी सदा योगी संसार भय नाशनाय नमः ।

ॐ तत्त्व दाता तत्त्वज्ञस्तत्त्वाय नमः ।

ॐ तत्त्व प्रकाशकाय नमः ।

ॐ शुद्धाय नमः ।

ॐ बुद्धाय नमः ।

ॐ नित्यमुक्ताय नमः ।

ॐ भक्त राजाय नमः ।

ॐ जयप्रदाय नमः ।

ॐ प्रलयाय नमः ।

ॐ अमित मायाय नमः ।

ॐ मायातीताय नमः ।

ॐ विमत्सराय नमः ।

ॐ माया-निर्जित-रक्षाय नमः ।

ॐ माया-निर्मित-विष्टपाय नमः।

ॐ मायाश्रयाय नमः ।

ॐ निर्लेपाय नमः ।

ॐ माया निर्वञ्चकाय नमः ।

ॐ सुखाय नमः ।

ॐ सुखी सुखप्रदाय नमः ।

ॐ नागाय नमः ।

ॐ महेशकृत संस्तवाय नमः ।

ॐ महेश्वराय नमः ।

ॐ सत्यसन्धाय नमः ।

ॐ शरभाय नमः ।

ॐ कलि पावनाय नमः ।

ॐ रसाय नमः ।

ॐ रसज्ञाय नमः ।

ॐ सम्मनस्तपस्चक्षवे नमः ।

ॐ भैरवाय नमः ।

ॐ घ्राणाय नमः ।

ॐ गन्धाय नमः ।

ॐ स्पर्शनाय नमः ।

ॐ स्पर्शाय नमः ।

ॐ अहङ्कारमानदाय नमः ।

ॐ नेति-नेति-गम्याय नमः ।

ॐ वैकुण्ठ भजन प्रियाय नमः ।

ॐ गिरीशाय नमः ।

ॐ गिरिजा कान्ताय नमः ।

ॐ दूर्वासाय नमः ।

ॐ कविरङ्गिराय नमः ।

ॐ भृगुर्वसिष्ठाय नमः ।

ॐ यवनस्तुम्बुरुर्नारदाय नमः ।

ॐ अमलाय नमः ।

ॐ विश्व क्षेत्राय नमः ।

ॐ विश्व बीजाय नमः ।

ॐ विश्व नेत्राय नमः ।

ॐ विश्वगाय नमः ।

ॐ याजकाय नमः ।

ॐ यजमानाय नमः ।

ॐ पावकाय नमः ।

ॐ पितरस्तथाय नमः ।

ॐ श्रद्ध बुद्धये नमः ।

ॐ क्षमा तन्द्रा मन्त्राय नमः ।

ॐ मन्त्रयुताय नमः ।

ॐ स्वराय नमः ।

ॐ राजेन्द्राय नमः ।

ॐ भूपती रुण्ड माली संसार सारथये नमः ।

ॐ नित्याय नमः ।

ॐ सम्पूर्ण कामाय नमः ।

ॐ भक्त कामधुगुत्तमाय नमः ।

ॐ गणपाय नमः ।

ॐ कीशपाय नमः ।

ॐ भ्राता पिता माता मारुतये नमः ।

ॐ सहस्र शीर्षा पुरुषाय नमः ।

ॐ सहस्राक्षाय नमः ।

ॐ सहस्रपाताय नमः ।

ॐ कामजिताय नमः ।

ॐ काम दहनाय नमः ।

ॐ कामाय नमः ।

ॐ काम्य फल प्रदाय नमः ।

ॐ मुद्राहारी राक्षसघ्नाय नमः ।

ॐ क्षिति भार हराय नमः ।

ॐ बलाय नमः ।

ॐ नख दंष्ट्र युधाय नमः ।

ॐ विष्णु भक्ताय नमः ।

ॐ अभय वर प्रदाय नमः ।

ॐ दर्पहा दर्पदाय नमः ।

ॐ दृप्ताय नमः ।

ॐ शत मूर्तिरमूर्तिमानाय नमः ।
ॐ महा निधिर्महा भोगाय नमः ।
ॐ महा भागाय नमः ।
ॐ महार्थदाय नमः ।
ॐ महाकाराय नमः ।
ॐ महा योगी महा तेजा महा द्युतये नमः ।
ॐ महा कर्मा महा नादाय नमः।
ॐ महा मन्त्राय नमः ।
ॐ महा मतये नमः ।
ॐ महाशयाय नमः ।
ॐ महोदाराय नमः ।
ॐ महादेवात्मकाय नमः ।
ॐ विभवे नमः ।
ॐ रुद्र कर्मा कृत कर्मा रत्न नाभाय नमः ॐ कृतागमाय नमः।
ॐ अम्भोधि लङ्घनाय नमः ।
ॐ सिंहाय नमः ।
ॐ नित्याय नमः ।
ॐ धर्माय नमः ।
ॐ प्रमोदनाय नमः ।
ॐ जितामित्राय नमः ।
ॐ जयाय नमः ।
ॐ सम विजयाय नमः ।
ॐ वायु वाहनाय नमः ।
ॐ जीव दात सहस्रांशुर्मुकुन्दाय नमः ।
ॐ भूरि दक्षिणाय नमः ।
ॐ सिद्धर्थाय नमः ।
ॐ सिद्धिदाय नमः ।
ॐ सिद्ध सङ्कल्पाय नमः ।
ॐ सिद्धि हेतुकाय नमः ।
ॐ सप्त पातालचरणाय नमः ।
ॐ सप्तर्षि गण वन्दिताय नमः ।
ॐ सप्ताब्धि लङ्घनाय नमः ।
ॐ वीराय नमः ।
ॐ सप्त द्वीपोरुमण्डलाय नमः ।
ॐ सप्ताङ्ग राज्य सुखदाय नमः ।

ॐ सप्त मातृ निशेविताय नमः ।
ॐ सप्त लोकैक मुकुटाय नमः।
ॐ सप्त होता स्वराश्रयाय नमः ।
ॐ सप्तच्छन्दाय नमः ।
ॐ निधये नमः ।
ॐ सप्तच्छन्दाय नमः ।
ॐ सप्त जनाश्रयाय नमः ।
ॐ सप्त सामोपगीताय नमः ।
ॐ सप्त पातल संश्रयाय नमः ।
ॐ मेधावी कीर्तिदाय नमः ।
ॐ शोक हारी दौर्भग्य नाशनाय नमः ।
ॐ सर्व वश्यकराय नमः ।
ॐ गर्भ दोषघ्नाय नमः ।
ॐ पुत्रपौत्रदाय नमः ।
ॐ प्रतिवादि मुखस्तम्भी तुष्टचित्ताय नमः ॐ प्रसादनाय नमः ।
ॐ पराभिचारशमनाय नमः ।
ॐ दवे नमः ।
ॐ खघ्नाय नमः ।
ॐ बन्ध मोक्षदाय नमः ।
ॐ नव द्वार पुराधाराय नमः ।
ॐ नव द्वार निकेतनाय नमः ।
ॐ नर नारायण स्तुत्याय नमः ।
ॐ नरनाथाय नमः ।
ॐ महेश्वराय नमः ।
ॐ मेखली कवची खद्गी भ्राजिष्णुर्जिष्णुसारथये नमः ।
ॐ बहु योजन विस्तीर्ण पुच्छाय नमः ।
ॐ पुच्छ हतासुराय नमः ।
ॐ दुष्टग्रह निहन्ता पिशा ग्रह घातकाय नमः ।
ॐ बाल ग्रह विनाशी धर्माय नमः ।
ॐ नेता कृपकराय नमः ।
ॐ उग्रकृत्यश्चोग्रवेग उग्र नेत्राय नमः ।
ॐ शत क्रतवे नमः ।

ॐ शत मन्युस्तुताय नमः ।

ॐ स्तुत्याय नमः ।

ॐ स्तुतये नमः ।

ॐ स्तोता महा बलाय नमः ।

ॐ समग्र गुणशाली व्यग्राय नमः।

ॐ रक्षाय नमः ।

ॐ विनाशकाय नमः ।

ॐ रक्षोघ्न हस्ताय नमः ।

ॐ ब्रह्मेशाय नमः ।

ॐ श्रीधराय नमः ।

ॐ भक्त वत्सलाय नमः ।

ॐ मेघ नादाय नमः ।

ॐ मेघ रूपाय नमः ।

ॐ मेघ वृष्टि निवारकाय नमः ।

ॐ मेघ जीवन हेतवे नमः ।

ॐ मेघ श्यामाय नमः ।

ॐ परात्मकाय नमः ।

ॐ समीर तनयाय नमः ।

ॐ बोध्ह तत्त्व विद्या विशारदाय नमः ।

ॐ अमोघाय नमः ।

ॐ अमोघहृष्टये नमः ।

ॐ इष्टदाय नमः ।

ॐ अनिष्ट नाशनाय नमः ।

ॐ अर्थाय नमः ।

ॐ अनर्थापहारी समर्थाय नमः ।

ॐ राम सेवकाय नमः ।

ॐ अर्थी धन्याय नमः ।

ॐ असुरारातये नमः ।

ॐ पुण्डरीकाक्ष आत्मभूवे नमः।

ॐ सङ्कर्षणाय नमः ।

ॐ विशुद्धात्मा विद्या राशये नमः ।

ॐ सुरेश्वराय नमः ।

ॐ अचलोद्धरकाय नमः ।

ॐ नित्याय नमः ।

ॐ सेतुकृद् राम सारथये नमः ।

ॐ आनन्दाय नमः ।

ॐ परमानन्दाय नमः ।

ॐ मत्स्याय नमः ।

ॐ कूर्माय नमः ।

ॐ निधये नमः ।

ॐ शमाय नमः ।

ॐ वाराहाय नमः ।

ॐ नारसिंहाय नमः ।

ॐ वामनाय नमः ।

ॐ जमदग्निजाय नमः ।

ॐ रामाय नमः ।

ॐ कृष्णाय नमः ।

ॐ शिवाय नमः ।

ॐ बुद्धाय नमः ।

ॐ कल्की रामाश्रयाय नमः ।

ॐ हराय नमः ।

ॐ नन्दी भृग्गी चण्डी गणेशाय नमः ।

ॐ गण सेविताय नमः ।

ॐ कर्माध्यक्ष्याय नमः ।

ॐ सुराध्यक्षाय नमः ।

ॐ विश्रामाय नमः ।

ॐ जगताम्पतये नमः ।

ॐ जगन्नथाय नमः ।

ॐ कपि श्रेष्टाय नमः ।

ॐ सर्वावसाय नमः ।

ॐ सदाश्रयाय नमः ।

ॐ सुग्रीवादिस्तुताय नमः ।

ॐ शान्ताय नमः ।

ॐ सर्व कर्मा प्लवङ्गमाय नमः ।

ॐ नखदारितरक्षाय नमः ।

ॐ नख युद्ध विशारदाय नमः ।

ॐ कुशलाय नमः ।

ॐ सुघनाय नमः ।

ॐ शेषाय नमः ।

ॐ वासुकिस्तक्षकाय नमः ।

ॐ स्वराय नमः ।

ॐ स्वर्ण वर्णाय नमः ।

ॐ बलाढ्याय नमः ।

ॐ राम पूज्याय नमः ।

ॐ अघनाशनाय नमः ।

ॐ कैवल्य दीपाय नमः ।

ॐ कैवल्याय नमः ।

ॐ गरुडाय नमः ।

ॐ पन्नगाय नमः ।

ॐ गुरवे नमः ।

ॐ किल्यारावहतारातिगर्वाय नमः ।

ॐ पर्वत भेदनाय नमः ।

ॐ वज्राङ्गाय नमः ।

ॐ वज्र वेगाय नमः ।

ॐ भक्ताय नमः ।

ॐ वज्र निवारकाय नमः ।

ॐ नखायुधाय नमः ।

ॐ मणिग्रीवाय नमः ।

ॐ ज्वालामाली भास्कराय नमः।

ॐ प्रौढ प्रतापस्तपनाय नमः ।

ॐ भक्त ताप निवारकाय नमः ।

ॐ शरणाय नमः ।

ॐ जीवनाय नमः ।

ॐ भोक्ता नानाचेष्टोह्यचञ्चलाय नमः ।

ॐ सुस्वस्थाय नमः ।

ॐ अस्वास्थ्यहा दवे नमः ।

ॐ खशमनाय नमः ।

ॐ पवनात्मजाय नमः ।

ॐ पावनाय नमः ।

ॐ पवनाय नमः ।

ॐ कान्ताय नमः ।

ॐ भक्तागस्सहनाय नमः ।

ॐ बलाय नमः ।

ॐ मेघ नादरिपुर्मेघनाद संहृतराक्षसाय नमः ।

ॐ क्षराय नमः ।

ॐ अक्षराय नमः ।

ॐ विनीतात्मा वानरेशाय नमः ।

ॐ सताङ्गतये नमः ।

ॐ श्री कण्टाय नमः ।

ॐ शिति कण्टाय नमः ।

ॐ सहायाय नमः ।

ॐ सहनायकाय नमः ।

ॐ अस्तूलस्त्वनणुर्भर्गाय नमः ।

ॐ देवाय नमः ।

ॐ संसृतिनाशनाय नमः ।

ॐ अध्यात्म विद्यासाराय नमः ।

ॐ अध्यात्मकुशलाय नमः ।

ॐ सुधीये नमः ।

ॐ अकल्मषाय नमः ।

ॐ सत्य हेतवे नमः ।

ॐ सत्यगाय नमः ।

ॐ सत्य गोचराय नमः ।

ॐ सत्य गर्भाय नमः ।

ॐ सत्य रूपाय नमः ।

ॐ सत्याय नमः ।

ॐ सत्य पराक्रमाय नमः ।

ॐ अन्जना प्राणलिङ्ग वायु वंशोद्भवाय नमः ।

ॐ शुभाय नमः ।

ॐ भद्र रूपाय नमः ।

ॐ रुद्र रूपाय नमः ।

ॐ सुरूपस्चित्र रूपधृताय नमः ।

ॐ मैनाक वन्दिताय नमः ।

ॐ सूक्ष्म दर्शनाय नमः ।

ॐ विजयाय नमः ।

ॐ जयाय नमः ।

ॐ क्रान्त दिग्मण्डलाय नमः ।

ॐ रुद्राय नमः ।

ॐ प्रकटीकृत विक्रमाय नमः ।

ॐ कम्बु कण्टाय नमः ।

ॐ प्रसन्नात्मा ह्रस्व नासाय नमः।

ॐ वृकोदराय नमः ।

ॐ लम्बोष्टाय नमः ।

ॐ कुण्डली चित्रमाली योगविदाय नमः ।

ॐ वराय नमः ।

ॐ विपश्चिताय नमः ।

ॐ कविरानन्द विग्रहाय नमः ।

ॐ अनन्य शासनाय नमः ।

ॐ फल्गुणीसूनुरव्यग्राय नमः ।

ॐ योगात्मा योगतत्पराय नमः ।

ॐ योग वेद्याय नमः ।

ॐ योग कर्ता योग योनिर्दिगम्बराय नमः

ॐ अकारादि क्षकारान्त वर्ण निर्मित विग्रहाय नमः ।

ॐ उलूखल मुखाय नमः ।

ॐ सिंहाय नमः ।

ॐ संस्तुताय नमः ।

ॐ परमेश्वराय नमः ।

ॐ श्लिष्ट जङ्घाय नमः ।

ॐ श्लिष्ट जानवे नमः ।

ॐ श्लिष्ट पाणये नमः ।

ॐ शिखा धराय नमः ।

ॐ सुशर्मा अमित शर्मा नारायण परायणाय नमः ।

ॐ जिष्णुर्भविष्णू रोचिष्णुर्ग्रसिष्णवे नमः ।

ॐ स्थाणुरेवाय नमः ।

ॐ हरी रुद्रानुकृद् वृक्ष कम्पनाय नमः ।

ॐ भूमि कम्पनाय नमः ।

ॐ गुण प्रवाहाय नमः ।

ॐ सूत्रात्मा वीत रागाय नमः ।

ॐ स्तुति प्रियाय नमः ।

ॐ नाग कन्या भय ध्वंसी रुक्म वर्णाय नमः ।

ॐ कपाल भृताय नमः ।

ॐ अनाकुलाय नमः ।

ॐ भवोपायाय नमः ।

ॐ अनपायाय नमः ।

ॐ वेद पारगाय नमः ।

ॐ अक्षराय नमः ।

ॐ पुरुषाय नमः ।

ॐ लोक नाथाय नमः ।

ॐ रक्ष प्रभु दृडाय नमः ।

ॐ अष्टाङ्ग योग फलभुक् सत्य सन्धाय नमः ।

ॐ पुरुष्टुताय नमः ।

ॐ स्मशान स्थन निलयाय नमः।

ॐ प्रेत विद्रावण क्षमाय नमः ।

ॐ पञ्चाक्षर पराय नमः ।

ॐ पं मातृकाय नमः ।

ॐ रञ्जनध्वजाय नमः ।

ॐ योगिनी वृन्द वन्द्याय नमः ।

ॐ शत्रुघ्नाय नमः ।

ॐ अनन्त विक्रमाय नमः ।

ॐ ब्रह्मचारी इन्द्रिय रिपवे नमः।

ॐ धृतदण्डाय नमः ।

ॐ दशात्मकाय नमः ।

ॐ अप्रपञ्चाय नमः ।

ॐ सदाचाराय नमः ।

ॐ शूर सेना विदारकाय नमः ।

ॐ वृद्धाय नमः ।

ॐ प्रमोद आनन्दाय नमः ।

ॐ सप्त जिह्व पतिर्धराय नमः ।

ॐ नव द्वार पुराधाराय नमः ।

ॐ प्रत्यग्राय नमः ।

ॐ सामगायकाय नमः ।

ॐ षट्चक्रधामा स्वर्लोकाय नमः।

ॐ भयह्यन्मानदाय नमः ।

ॐ अमदाय नमः ।

ॐ सर्व वश्यकराय नमः ।

ॐ शक्तिरनन्ताय नमः ।

ॐ अनन्त मङ्गलाय नमः ।

ॐ अष्ट मूर्तिर्धराय नमः ।

ॐ नेता विरूपाय नमः ।

ॐ स्वर सुन्दराय नमः ।

ॐ धूम केतुर्महा केतवे नमः ।

ॐ सत्य केतुर्महारथाय नमः ।

ॐ नन्दि प्रियाय नमः ।

ॐ स्वतन्त्राय नमः ।

ॐ मेखली समर प्रियाय नमः ।

ॐ लोहाङ्गाय नमः ।

ॐ सर्वविद् धन्वी षट्कलाय नमः ।

ॐ शर्व ईश्वराय नमः ।

ॐ फल भुक् फल हस्ताय नमः।

ॐ सर्व कर्म फलप्रदाय नमः ।
ॐ धर्माध्यक्षाय नमः ।
ॐ धर्मफलाय नमः ।
ॐ धर्माय नमः ।
ॐ धर्मप्रदाय नमः ।
ॐ अर्थदाय नमः ।
ॐ पं विंशति तत्त्वज्ञाय नमः ।
ॐ तारक ब्रह्म तत्पराय नमः ।
ॐ त्रि मार्गवसतिर्भूमये नमः ।
ॐ सर्व दवे नमः ।
ॐ ख निबर्हणाय नमः ।
ॐ ऊर्जस्वानाय नमः ।
ॐ निष्कलाय नमः ।
ॐ शूली माली गर्जन्निशाचराय नमः ।
ॐ रक्ताम्बर धराय नमः ।
ॐ रक्ताय नमः ।
ॐ रक्त माला विभूषणाय नमः ।
ॐ वन माली शुभाङ्गाय नमः ।
ॐ श्वेताय नमः ।
ॐ स्वेताम्बराय नमः ।
ॐ युवाय नमः ।
ॐ जयाय नमः ।
ॐ जय परीवाराय नमः ।
ॐ सहस्र वदनाय नमः ।
ॐ कवये नमः ।
ॐ शाकिनी डाकिनी यक्ष रक्षाय नमः ।
ॐ भूतौघ भञ्जनाय नमः ।
ॐ सध्योजाताय नमः ।
ॐ कामगतिर्ज्ञान मूर्तये नमः ।
ॐ यशस्कराय नमः ।
ॐ शम्भु तेजाय नमः ।
ॐ सार्वभौमाय नमः ।
ॐ विष्णु भक्ताय नमः ।
ॐ प्लवङ्गमाय नमः ।
ॐ चतुर्नवति मन्त्रज्ञाय नमः ।
ॐ पौलस्त्य बल दर्पहाय नमः ।
ॐ सर्व लक्ष्मी प्रदाय नमः ।
ॐ श्रीमानाय नमः ।

ॐ अनादप्रिय ईडिताय नमः ।

ॐ स्मृतिर्बीजाय नमः ।

ॐ सुरेशानाय नमः ।

ॐ संसार भय नाशनाय नमः ।

ॐ उत्तमाय नमः ।

ॐ श्रीपरीवाराय नमः ।

ॐ श्री भू दुर्गा कामाख्यकाय नमः ।

ॐ सदागतिर्मातरये नमः ।

ॐ राम पादाब्ज षट्पदाय नमः।

ॐ नील प्रियाय नमः ।

ॐ नील वर्णाय नमः ।

ॐ नील वर्ण प्रियाय नमः ।

ॐ सुहृताय नमः ।

ॐ राम दूताय नमः ।

ॐ लोक बन्धवे नमः ।

ॐ अन्तरात्मा मनोरमाय नमः ।

ॐ श्री राम ध्यानकृद् वीराय नमः ।

ॐ सदा किम्पुरुषस्स्तुताय नमः।

ॐ राम कार्यान्तरङ्गाय नमः ।

ॐ शुद्धिर्गतिरानमयाय नमः ।

ॐ पुण्य श्लोकाय नमः ।

ॐ परानन्दाय नमः ।

ॐ परेशाय नमः ।

ॐ प्रिय सारथये नमः ।

ॐ लोक स्वामि मुक्ति दाता सर्व कारण कारणाय नमः ।

ॐ महा बलाय नमः ।

ॐ महा वीराय नमः ।

ॐ पारावारगतिर्गुरवे नमः ।

ॐ समस्त लोक साक्षी समस्त सुर वन्दिताय नमः ।

ॐ सीता समेत श्री राम पाद सेवा धुरन्धराय नमः ।

**संकलनकर्ता:**

**श्री मनीष त्यागी**

संस्थापक एवं अध्यक्ष

श्री हिंदू धर्म वैदिक एजुकेशन फाउंडेशन

www.shdvef.com

**।।ॐ नमो भगवते वासुदेवाय:।।**